॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अगस्त, 2013 वर्ष 16, अंक 8 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये

विक्रमी सम्वत् 2070 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 20

वर्तमान परिपेक्ष्य में महर्षि का राष्ट्रवाद

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

❒ अरूणा सतीजा

मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर सुखकारी है। इस भूमि की मिट्टी में पल-पोष कर ही तो हम बड़े होते हैं। यही भूमि जीवन से लेकर मृत्यु तक जीवन का आधार है। इसी राष्ट्र से अटूट प्रेम ही तो सच्ची राष्ट्रीयता है जिसकी शिक्षा माँ द्वारा बचपन में ही बच्चे को मिलनी चाहिए। जो व्यक्ति राष्ट्र को अपने जीवन में सदा सबसे उच्च स्थान देता है उसकी खातिर अपने प्राणों को उत्सर्ग करने के लिए तत्पर रहता है वह सच्चा राष्ट्रवादी तथा राष्ट्र प्रेमी भक्त है। राष्ट्र धर्म द्वारा राष्ट्र रक्षा करना तथा उसे समृद्धिशाली बनाना प्रत्येक नागरिक का प्रथम कर्त्तव्य है। जो व्यक्ति स्वदेशी, खेल, वेषभूषा, वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति को अपनाता है वही राष्ट्र पुजारी बन राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर पहुंचाता है तथा विश्व के मानचित्र पर राष्ट्र को गौरवमय स्थान दिलाता है। तभी वेदमन्त्र ने मनुष्यों को ऐसी प्रेरणा दी है कि वह गर्व से कहें **''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिवा।''**

यह पृथ्वी हमारी माता है और हम सब इसके पुत्र (सन्तान) हैं। तन, मन व धन सब कुछ न्यौछावर कर इसकी रक्षा करना हमारा परम धर्म है। आर्यो ने, राष्ट्र धर्म की अनुपालना कर आर्यावर्त्त देश को विश्व-गुरु बना दिया। ऋषि मुनियों की यह तपो भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर आनन्दमयी थी। यहाँ गौ धन के कारण दूध दही की नदियां बहती थी। विश्व के लोग इसे सोने की चिड़िया कहते थे।

महाभारत काल में राष्ट्रीयता की भावना धीरे-धीरे क्षीण होने लगी। स्वार्थ व लोलुपता की भावना ने सदाचार की सभी सीमाएं पार कर ली। युधिष्ठिर सुकर्मो के कारण कहलाते धर्मराज थे परन्तु थे जुआरी। दूसरा गुट शकुनि का था। इनका वही अन्त हुआ जो जुआरियों का होता है। जुए में सब कुछ हार गये द्रौपदी को भी दाव पर लगा दिया। द्रौपदी का दुर्योधन को अन्धे का पुत्र कहना कितना निन्दनीय था। दूतरूप में कृष्ण को कौरवों द्वारा यह संदेश भेजना कि युद्ध के बिना पांच गांव तो क्या सुई की नोक भर भूमि भी नहीं देंगे। इसी घड़ी से (क्षण) भारत के भाग्य का सूर्य अस्त होने लगा। एक भयंकर विनाशकारी युद्ध हुआ जो एक ही वंशज के दो परिवारों के बीच था।

सत्य कहा है **''एक घरेलू झगड़ा बाहर के सैकड़ों युद्धों से अधिक घातक होता है''।** महाभारत का युद्ध इसका ऐतिहासिक प्रमाण है।

वैदिक धर्म विलुप्त हो गया, हिन्दुओं का मस्तिष्क आज की तरह पुरोहितों के हाथ में था, धर्म एक खिलौना था। मिस मेओ ने तो हिन्दुओं को देवताओं का दास बताया, देवताओं की डोर निकृष्टतम, अभिमानी, अल्पदर्शी-ज्योतिषि, पुरोहित व पण्डों, जो एक प्रकार के एजैण्ट थे, के हाथ में थी। सोमनाथ मन्दिर की लूट तथा राणा सांगा की सेना का बाबर की सेना पर आक्रमण न करना तथा बाबर की जीत का एक मात्र कारण अशुभ मुहूर्त था।

विदेशी लूटेरों ने इस कमजोरी का पूरा पूरा लाभ उठाया। एक के बाद एक लगातार आतंककारी लूटेरे आते रहे लूटते रहे। और अन्त में भारत के शासक बन बैठे। पठान गये, मुगल आये, फिर अंग्रेज आये भारतीय गुलाम ही रहे। पिंजरा बदला पर दासता नहीं। हिन्दुओं को बताया ही नहीं जाता था कि उनका अतीत इतना गौरवमय था। उन्हें तो बस तलवार के बल पर मुसलमान बनाया जाता, बाद में ईसाई बनाये गये।

(शेष पृष्ठ 12 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डी ए वी आन्दोलनः ज्ञान एवं विज्ञान का समन्वय

महर्षि स्वामी दयानन्द एक ऐसे समय में भारत का उद्धार करने आए जबकि हमारा देश विदेशियों के चंगुल में फंसा हुआ था। उस समय प्रत्येक नर-नारी देश की दशा पर दो अश्रु अवश्य बहाता था परन्तु भारतीय सभ्यता, संस्कृति, धर्म और समाज की उन्नति की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया जा रहा था। ऐसी स्थिति को उस समय एक दूरदर्शी और मन्त्रद्रष्टा ऋषि ने ही अपने चिन्तन से भली प्रकार समझा था और अपना सर्वस्व समर्पण करके सांस्कृतिक पुनरूत्थान का महान् कार्य आरम्भ किया था। किन्तु देव को यह भी स्वीकार न हुआ। विद्वेषियों के विष ने महर्षि की जीवन-लीला समाप्त कर दी। उनकी मान्यताएं, उनकी धारणएं और भारत की स्वतन्त्रता के बाद आने वाली समस्याओं के सभी समाधान अधूरे रह गए।

देव दयानन्द की सुगन्धित वाटिका को हराभरा रखने और उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का प्रश्न ऋषि भक्तों के समक्ष विकट समस्या बन खड़ा हुआ था। भिन्न-भिन्न प्रस्ताव सामने आए। आखिर अन्धकार की बेला में एक प्रकाश किरण आकर खड़ी हो गई। अपना यौवन और सर्वस्व समर्पण करने वाले वे महात्मा थे हंसराज, जो एक ऋषि की दृष्टि लेकर अवतरित हुए। उन्होंने उस समय की परिस्थितियों का बड़ी सूक्ष्म और पैनी दृष्टि से निरीक्षण और परीक्षण किया। वह यह भली प्रकार समझ गए थे कि चारों ओर फैली अंग्रेजियत में कवेल भारतीय संस्कृति के गीत गाने से ही कुछ न बनेगा। अंग्रेज के पैर इतनी मजबूती से जम चुके हैं कि उन्हें केवल शाब्दिक विवाद द्वारा ही नहीं उखाड़ा जा सकेगा। इस कार्य के लिए कुछ रचनात्मक और ठोस कार्य करना होगा। साथ ही महर्षि दयानन्द की मान्यताओं को जनसामान्य तक पहुंचाने का सरल और प्रभावी साधन भी केवल शिक्षण संस्थाएं ही उपयुक्त प्रतीत हुआ। अंग्रेजों ने सारे भारत में मिशन स्कूल और कॉलेजों का जाल बिछा दिया था। उन्हीं के माध्यम से भारतीय युवा-मस्तिष्क को पूरी तरह अभारतीय बनाया जा रहा है। तत्कालीन युवक अपना गौरवशाली अतीत भूलता जा रहा था। भारतीय इतिहास और संस्कृति को विकृत रूप से प्रस्तुत किया जा रहा था। भारतीय युवा-पीढ़ी में अपनी संस्कृति के प्रति हीनता और उपेक्षा की भावना को जगाया जा रहा था। इस स्थिति का प्रतिकार आवश्यक थां इसीलिए ऋषि भक्तों ने एंग्लो पद्धति को साथ लेकर उसी के माध्यम से वैदिक मान्यताओं को युवा मस्तिष्क में बैठाने के लिए डी.ए.वी. आन्दोलन का सूत्रपात किया। महात्मा हंसराज और उनके पश्चात् अनेक युवकों ने इसी कड़ी को जीवित रखने के लिए जीवन दान दिया। भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में डी.ए.वी. आन्दोलन की भूमिका पर विचार करते समय हमें पिछली एक शताब्दी में बदलते मानव-समाज पर एक दृष्टि डालनी होगी।

जवानी मनुष्य के जीवन का सर्वोत्तम काल है। जवान आदमी में नई चीजों को जानने और कुछ कार्य करने की तीव्र भावना होती है।

(शेष पृष्ठ 19 पर)

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति द्वारा उत्तराखण्ड त्रासदी हेतु 2 करोड़ 51 लाख रूपये का चेक भेंट

उपरोक्त धनराशि उत्तराखण्ड के मुख्यमन्त्री श्री बहुगुणा जी को भेंट करते श्री राधेश्याम शर्मा जी (महामन्त्री) श्री पूनम सूरी (प्रधान), श्री दीप ओ३म् चेरी (उपप्रधान), श्री महेश चौपड़ा (कोषाध्यक्ष), श्रीमती जुनेश काकरिया (निर्देशक)

वेद लिए आया ब्रह्मचारी देश उद्धारक पर उपकारी

केवल आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जिसने केवल एक व्यक्ति की नहीं, एक विषय की नहीं, एक समाज की नहीं, एक राष्ट्र की नहीं, अपितु पूरे मानव मात्र को सुखी और आनन्दित करने की बात कही है। वेद को ही ग्रहण करने की बात कही है। प्रत्येक को अपने स्वतन्त्र राष्ट्र की अखण्डता और स्वतन्त्रता की रक्षा करनी चाहिए और सभी राष्ट्र मिलकर एक सुदृढ़, शान्तिप्रिय भूमण्डल बने ऐसी कामना रखने की बात कही है।

आर्य समाज की स्थापना के पीछे कोई छिपा कार्यक्रम नहीं था। किसी धर्म समुदाय को नीचा दिखाना नहीं था। स्वामी जी ने जब भी संदेश दिया तो वह केवल वेद आधारित, विज्ञान सम्मत सारे मानव मात्र को दिया। आपने अपने संदेश में स्पष्ट कर दिया था की आर्य समाज की स्थापना करने के पीछे कोई नया धर्म या सम्प्रदाय नहीं है। आर्य समाज वेद आधारित श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज हो ऐसी कामना है। आर्यो का एक मात्र उद्देश्य आर्य समाज के नियमों द्वारा सार्वभौमिक, सार्वकालिक, मानव जाति की उन्नति की ओर चलने की प्रेरणा देना मात्र है, संसार के अनेकों देशों के बुद्धिजीवियों ने इन आर्य समाज के 10 नियमों पर बड़ा मंथन किया परन्तु किसी ने और कहीं भी इसमें त्रुटि नहीं पाई। इनमें शाश्वत सत्य की स्पष्ट झलक है।

आर्य समाज ने कहीं भी एक की बात नहीं कही अपितु सभी के कल्याण की बात कहीं है। हमेशा संगतीकरण पर विशेष जोड़ दिया है। हमारी प्रार्थना में भी 'पूजनीय प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये' 'तुने हमें उत्पन्न किया' ' ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला' कहीं भी मेरे शब्द का प्रयोग नहीं। आर्य समाज द्वारा अपने लिए की गई प्रार्थना को सबसे शुन्य श्रेणी की प्रार्थना माना गया है।

आर्य समाज ने हमेशा राष्ट्र को सर्वप्रिय माना है। राष्ट्र उत्थान को प्रमुख मानते हुए स्वामी जी ने लिखा है **''हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।''**

यह वेदवाद और राष्ट्रवाद ही आर्यसमाज को ऋषि दयानन्द से विरासत में मिला है। इसीलिए हम कहते हैं- आर्य समाज की दो भुजाएँ है-एक वेद और दूसरी राष्ट्र। इन दोनों में से एक भी भुजा को काट देंगे तो आर्यसमाज स्वस्थ अपने में स्थित नहीं रहेगा, वह पंगु हो जाएगा, वह केवल वेदवादी सम्प्रदाय बन कर रह जाएगा और तब, अन्य सम्प्रदायों से उसमें कोई अन्तर नहीं रहेगा। अन्य जितनी राजनैतिक संस्थाएँ हैं, वे केवल राष्ट्र-राष्ट्र चिल्लाती हैं, वे धर्म का नाम नहीं लेती, और जितनी धार्मिक संस्थाएं हैं, वे केवल अपने मजहब या मजहबी किताब का नाम लेती हैं, उनको राष्ट्र से कोई लेना-देना नहीं है। सब राजनैतिक पार्टियाँ राजनैतिक साम्प्रदायिकता से ग्रस्त हैं और धार्मिक संस्थाएं धार्मिक साम्प्रदायिकता से ग्रस्त हैं, जब कि केवलमात्र आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो धार्मिक या राजनैतिक दोनों प्रकार की साम्प्रदायिकताओं से मुक्त है। इसलिए हम आर्यसमाज को कोई पार्टी या सम्प्रदाय कहने के बजाय ऐसा संगठनात्मक आन्दोलन कहना पसन्द करते है जो वेद पर आधारित राष्ट्र का केवल भारत का नहीं-प्रत्येक राष्ट्र का, निर्माण करना चाहता है।

अन्य मतावलम्बियों को 'वेद पर आधारित' विशेषण से साम्प्रदायिकता की गन्ध आ सकती है। पर उनको यह बताने की आवश्यकता है कि वेद किसी सम्प्रदाय या वर्ग-विशेष के लिए नहीं, न ही किसी राष्ट्र-विशेष या काल-विशेष के लिए है, प्रत्युत वह तो मानवमात्र को अमृत-स्वरूप परमपिता परमात्मा की सन्तान मानकर एक इकाई के रूप में स्वीकार करता है।

किसी प्रसिद्ध मुस्लिम नेता ने कभी कहा था कि मैं यह देखकर चकित होता हूँ कि ''आर्यसमाज की शरण में आते ही व्यक्ति राष्ट्रभक्त बन जाता है।'' इसमें चकित होने की कोई बात नहीं। राष्ट्रभक्ति प्रत्येक आर्यसमाजी की घुट्टी में है। यही आर्यसमाज की विशेषता है, यही उसकी अपनी अलग पहचान है।

इस विश्लेषण के बाद आधुनिक स्वतन्त्रता-संग्राम में आर्यसमाज के योगदान के सम्बन्ध में कहने को बहुत कम रह जाता है। यों व्यक्तियों पर जाओ तो इसका ब्यौरा अत्यन्त विस्तृत होगा,

किसी कवि के शब्दों में

वेद की बंशी हाथ में लेकर,
महर्षि ने जब गीत सुनाए,
सारे जहां में छा गई मस्ती,
झूम उठे सब अपने पराए,
कोई झुबां पर लाये न लाये,
महर्षि गाथा गाए ना गाए,
दिल से मगर सब मान चुके हैं,
महर्षि ने जो उपकार कमाए
वेद लिए आया ब्रह्मचारी,
देश उद्धारक पर उपकारी,
बार-बार जाऊं बलिहारी
एक बार फिर भारत आए

अजय टंकारावाला

राष्ट्र-वन्दना

हे मातृ भूमि! हे पितृ धाम
प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम।।
विद्वान् जगें, शासक जागें,
जो ब्रह्मतेज का प्रण पागें।
जिनके बल, आयुध के द्वारा,
अरि-प्रतिगामी डर कर भागें।
अनुपम स्वदेश हो ख्यात नाम।
प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम।।
अन्नपूर्णा सुभग नारियाँ,
सदा सुनायें प्रखर लोरियाँ।
शिशु सभ्य युवा यजमान बनें,
रोज ओज की पकड़ डोरियाँ।
जो बढ़े विजय की ध्वजा थाम।
प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम।।
कामधेनु हों कल्पवृक्ष हों,
सैनिकगण के सुदृढ़ वक्ष हों।
शिल्पकार, गुरु श्रमिक-श्रेष्ठी,
धर्मनिष्ठ कल्याण दक्ष हों।
हो पवन प्रभा सुरभित ललाम।
प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम।।
मृदु मेघ गगन में गहरायें,
जो इच्छित जल को बरसायें।
खेत भरें उद्यान हरे हों,
शस्य श्यामला भूमि बनायें।
फलफूल अन्न औषधि उपजें,
प्रासाद-कुटी सुखसाज सजें।
हो ललित कला विज्ञान भला,
उत्तम चरित्र के राग बजें।
सब पायें नर विश्राम-काम।
प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम।।
प्रभु योग क्षेम का वर्तन हों,
सर्वत्र हर्ष-आकर्षण हो।
निष्पक्ष एकता समता का,
संगठन प्रेम सम्वर्द्धन हो।
हे राष्ट्र रहो अभिराम-साम।
प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम।।

– श्री देवनारायण भारद्वाज, (अलीगढ़)

हिंसा न करें

❑ प्रोफेसर अनूप कुमार गक्खड़, एम.डी. आयुर्वेद

महर्षि चरक ने जहाँ एक ओर समस्त प्राणियों के प्रति मैत्री भाव और अहिंसा का उपदेश दिया है, तथा प्राणियों के प्राणों की वृद्धि करने वाले भावों में अहिंसा को उत्कृष्ट तक बताया है, वहाँ दूसरी ओर रोग निवृत्ति और स्वास्थ्य लाभ के लिए मांस भक्षण का उपदेश देते हुए हिंसा का समर्थन किया है। इसका उत्तर यह है चूंकि अहिंसा पूर्वक मांस भक्षण के प्रति मनुष्य का स्वाभाविक रोग है, इसलिये आयुर्वेद के आचार्यो ने किसी-किसी रोग में मांस के हितकर होने के कारण केवल उसका निर्देश किया है, अहिंसात्मक मांसभक्षण का विधान नहीं किया है। इसी प्रकार उन्होंने स्वस्थवृत्त और रोगिचर्या में मदिरा की पथ्यता का निर्देशमात्र किया है, मदिरा पान का विधान नहीं किया है। मांस और मदिरा के संयत सेवन का उपदेश रोग निवृत्ति के उद्देश्य से किया गया है, किन्तु हिंसाजन्य अधर्म का निषेध नहीं किया गया है। मांस और मद्य का सेवन करने से रोगी नीरोग भले ही हो जाय, किन्तु हिंसाजन्य अधर्म का भोगी उसे अवश्य ही होना पड़ेगा। जिस प्रकार 'श्येनेनाभिचरन्यजेत' इस श्रुतिवाक्य में, अभिचार की रागत: प्राप्ति होने के कारण, श्येनायाग को अभिचार का साधनमात्र बताया गया है, किन्तु श्येन के द्वारा अभिचार करने से जो अनिवार्य रूप से अधर्म होता है, उसका निषेध नही किया गया है। मनु ने भी प्रकारान्तर से इस तथ्य को स्वीकार किया है-''प्राणियों की हिंसा के विना किसी भी प्रकार से मांस की प्राप्ति नहीं हो सकती है, और प्राणियों की हिंसा स्वर्ग प्रद नहीं है, इसलिए मांस भक्षण का परित्याग करना चाहिए। न तो मांस भक्षण में कोई दोष है, न मद्यपान में, और न मैथुन में, क्योंकि इनके प्रति प्राणियों की स्वाभाविक प्रवृति हैं, किन्तु इनसे निवृत होना महाफलदायक है। चक्रपाणि का कथन है कि यदि मनुष्य की जीवन रक्षा मांसोपयोग के बिना सम्भव न हो, तो 'सर्वत्रात्मानं गोपायीत' इस श्रुतिवचन के अनुसार हिंसोपार्जित मांसभक्षण करने में अधर्म नहीं होता है। हाँ, यदि मांसभक्षण के अतिरिक्त दूसरे उपाय भी जीवन रक्षा के लिए सम्भव हों, तो केवल शरीर की पुष्टि के प्रयोजन की जाने वाली हिंसा अवश्य अधर्मजनक होती है। अथवा आयुर्वेद में हिंसा को यदि विहित भी माना जाय, तो भी उसे दोष मुक्ति नहीं मिल सकती है, क्योकि आयुर्वेद की विविधाँ मुख्यतया आरोग्यसाधन का उपदेश करती है, केवल धर्म साधन का ही उपदेश नहीं करती है। जैसा कि चरक सूत्रस्थान में कहा गया है- इस आयुर्वेद तन्त्र प्रयोजन धातुओं में साम्य उत्पन्न करना है।

पूर्ण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए मनुष्य को इस सद्वृत्त का पूर्ण रूप से पालन करना चाहिए। जो पुरुष इस यथोक्त स्वस्थवृत्त का सम्यक् प्रकार से अनुष्ठान करता है, वह सर्वदा नीरोग रहता हुआ पूरे सौ वर्ष तक जीवित रहता है। साधुजनों के मध्य प्रशंसित होता हुआ वह पुरुष सम्पूर्ण मनुष्य लोक को अपने निर्मल यश से आपूरित कर देता है, धर्म और अर्थ को प्राप्त करता है।

प्राणियों के प्रति दया भाव रखें

देवता, गौ, ब्राह्मण, गुरूजन, वृद्धजन, सिद्ध महापुरूष और आचार्य की पूजा सेवा करनी चाहिए। अग्नि की सेवा करना चाहिए अर्थात् नित्य अग्निहोत्र करना चाहिए। दोषों को नष्ट करने वाली प्रशस्त औषधियाँ धारण करनी चाहिए।

सभी प्राणियों के प्रति बन्धुभाव रखना चाहिए। प्राणियों के प्राणों की वृद्धि करने वाले भावों में अहिंसा को सर्वोत्कृष्ट कहा गया है- **तत्राहिंसा प्राणिनां प्राणवर्धनानामृत्कृष्टतमा**, क्योंकि अहिंसा से धर्म होता है और धर्म से आयु की बुद्धि होती है। यद्यधि राजदृष्टि और पतित लोगों की चिकित्सा करने का विधान नहीं है क्योंकि उससे अधर्म होता है, तथापि उनके प्रति भी करूणा का भाव रखना चाहिए, क्योंकि जो सत्पुरूष होते हैं उनका प्राणियों के अत्यधिक अनुग्रह करने का भाव होता है और तत्वज्ञान के देने में वे दया से भरपूर होते हैं- परो भूतेष्वनुक्रशस्तत्वज्ञाने परा दर्याद्र। क्रोधी पुरुषों को अनुनय विनय द्वारा समझाना चाहिए। डरे हुए लोगों को आश्वासन (सान्त्वना) देना चाहिए। दीन और असहाय लोगों की आगे बढ़कार सहायता और रक्षा करनी चाहिए। सत्यप्रतिज्ञ (वादे का पक्का) होना चाहिए। शान्ति को सबसे प्रासान समझना चाहिए। दूसरे के कठोर वचनों को सहन करने की आदत डालना चाहिए। मन में उठते हुए क्रोध को नष्ट कर देना चाहिए। शान्त रहने में जो गुण हैं उनको देखना चाहिए, क्योंकि पथ्य अर्थात् हितकर भावों में प्रशम (शान्ति) को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है-ह्प्रशम: पथ्यानामा। रोग और द्वेष कारणों को नष्ट कर देना चाहिए। माता सर्व तीर्थमयी हैं और पिता सम्पूर्ण देवताओं का स्वरूप हैं। इसलिए सब प्रकार से यत्नपूर्वक माता-पिता का पूजन करें। जो माता-पिता की प्रदक्षिणा करता है, उसके द्वारा समूची पृथ्वी की परिक्रमा हो जाती है।

विभागाध्यक्ष,संहिता,संस्कृत एवं सिद्धान्त, ऋषिकुल राजकीय आयुर्वेदिक कालेज
हरिद्वार 249401, मो. 09410982602

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

श्रीकृष्णः जीवन और सन्देश

❑ रामनिवास 'गुणग्राहक'

श्रीकृष्ण का जीवन परिचय मूलतः हमें महर्षि वेद व्यास कृत 'महाभारत' और गीतगोविन्द के रचयिता पं. जयदेव के भाई पं. बोपदेव के लिखे हुए 'भागवत-पुराण' नामक ग्रन्थों से मिलता है। जिन्होंने इन दोनों ग्रन्थों को पढ़ा है, वे जानते हैं कि इन दोनों ग्रन्थों में श्री कृष्ण के जीवन के बारे में जो कुछ लिखा है वह एक दूसरे के साथ कहीं भी मेल नहीं खाता। इस तथ्य को सर्वप्रथम महर्षि देव दयानन्द सरस्वती की दिव्य दृष्टि ने देखा और उन्होंने अपने स्वभाव के अनुसार बड़ी निर्भीकता से अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में इसका उल्लेख निम्न शब्दों में किया है-'देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव आप्त पुरुषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण नहीं, श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा। इस भागवत बनाने वाले ने मनमाने अनुचित दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, .कृष्णा दासी ने समागम पर स्त्रियों से रास-मण्डल आदि मिथ्या दोष भी श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती?'' इस महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण के साथ ही ऋषि दयानन्द ने एक रहस्योद्घाटन किया है कि पं. बोपदेव ने स्वयं स्वीकार किया है कि भावगत पुराण मैंने लिखा है। स्वामी जी लिखते हैं कि उसके तीन पन्ने हमारे पास हैं।

महाभारत एक ऋषि ग्रन्थ है, इसमें आता है कि पितामह भीष्म जैसा वयोवृद्ध और ज्ञान वृद्ध पुरुष भरी सभा में घोषणा करता है- 'मैंने बहुत से ज्ञान वृद्ध महात्माओं का संग किया है, वे सब श्री कृष्ण के सत्कर्मों की प्रशंसा करते हैं। हम श्री कृष्ण के यश और शौर्य पर मुग्ध हैं। वेदवेदांग का ज्ञान और बल पृथ्वीतल पर इनके समान किसी और में नहीं है।'' महर्षि वेद व्यास के ऐसे गौरवपूर्ण शब्दों के होते हुए पुराणों के पतित विचारों को मानना-मनवाना बुद्धिमानों व सज्जनों के लिए उचित नहीं लगता। श्री कृष्ण से सच्चे प्रेम करने वालों का पहला कर्तव्य है कि वह श्रीकृष्ण जी के बारे में जानने के लिए महाभारत को अवश्य पढ़ें। श्री कृष्ण एक ऐसे महामानव का नाम है, जो महाभारत जैसे भीषण युद्ध का महानायक तो कहलाया, मगर उस सारे युद्ध में कोई महारथी तो क्या, सामान्य सैनिक भी अपने हाथों से नहीं मारा। महात्मा विदुर का एक नीति वाक्य इस पर बड़ा सटीक बैठता है-'बुद्धि श्रेष्ठानि कर्माणि बाहु मध्यम भारत'। अर्थात् बुद्धि द्वारा किए गए कर्म श्रेष्ठ और बाहुबल से किए गए कार्य मध्यम स्तर के होते हैं। सब जानते हैं कि सम्पूर्ण महाभारत में श्री कृष्ण ने केवल बुद्धि बल से ही काम लिया था बाहुबल से नहीं। श्री कृष्ण के बुद्धिबल ने उन्हें संसार का सर्वोत्तम कूटनीतिज्ञ बना दिया था। शुकाचार्य 'शुक्रनीति में लिखते हैं- **''न कूटनीतिक अभवत् श्री कृष्ण सदृशो नृपः''** (14.12.97) पाण्डवों को भी श्री कृष्ण की नीतिमत्ता और रण-चातुर्य पर अटल भरोसा था। युधिष्ठिर के प्रथम राजसूय-यज्ञ की मन्त्रणा के समय जरासन्ध को मारने के बात सामने आई तो महाराज युधिष्ठिर ने कहा-हे कृष्ण! जिसे यम भी नहीं जीत सकता उसे हम कैसे जीत सकते हैं। युधिष्ठिर की आशंका गलत भी नहीं थी क्योंकि स्वयं कृष्ण भी उससे बचने के लिए मथुरा को छोड़ गए थे। लेकिन श्री कृष्णा के समझाने पर युधिष्ठिर अपने दोनों भाई भीम और अर्जुन को यह कहते हुए श्री कृष्ण के साथ भेज देते हैं-''वयम् आश्रित्य गोविन्दं यतामः कार्य सिद्धये।'' ऐसे ही कुछ भाव पाण्डवों की माता कुन्ती ने श्री कृष्ण के सामने प्रकट किए। दुर्योधन को समझाने का प्रयास जब असफल हो गया, युद्ध अनिवार्य हो गया तो लौटते समय श्री कृष्ण माता कुन्ती से मिले। कुन्ती ने अपने पुत्रों के लिए वीरोचित सन्देश दिया, द्रौपदी के प्रति स्नेह प्रकट किया और अन्त में कहा-'कृष्ण मेरे पुत्र तेरे पास मेरी धरोहर हैं, उनकी रक्षा करना।''

श्री कृष्ण ने गीता में 'योगः कर्मसु कौशलम्' कहकर कर्म की कुशलता को ही योग कहा है। यह कर्म कुशलता श्री कृष्ण के जीवन में पूर्णतः ओत-प्रोत थी इसलिए उन्हें योगीराज कृष्ण कहते हैं। कंस के कारण कारागार में जन्म लेकर बालपन में ही माता-पिता के लाड-प्यार से वञ्चित होना पड़ा। भीषण कष्ट भोग रहे माता-पिता के प्रतिशोधी संस्कार, दूसरे विगत कई जन्मों की योग साधना से प्राप्त दिव्य विभूतियाँ इन दोनों के विलक्षण संयोग का परिणाम था। श्रीकृष्ण का विराट् व्यक्तित्व। उनके हृदय में अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध एक प्रचण्ड आग धधकती रहती थी, लेकिन आत्म संयम ऐसा कि कंस वध से दो पल पूर्व किसी को पता नहीं कि क्या होने वाला है। श्री कृष्ण ने जो भी युद्ध किये, केवल अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध किए। राज्य पर अधिकार करने की लालसा कहीं नहीं दिखी। कंस को मारकर उसके पिता उग्रसेन को राजगद्दी पर बिठाया तो उधर जरासन्ध का वध करके उसके पुत्र का राजतिलक करके खाली हाथ लौट आए। कंस वध के बाद श्रीकृष्ण शिक्षा के लिए सान्दीपनि ऋषि के आश्रम में गए। वहां 36 वर्ष की आयु तक व्याकरण व वेद शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। श्री कृष्ण के पावन चरित्र और विमल यश को सुनकर राजकुमारी रूक्मिणी इन्हें अपने पति रूप में वरणकर चुकी थी। जब उसके सामने धर्म संकट आया तो श्री कृष्ण ने वीरोचित ढंग से विवाह तो कर लिया, मगर वे जानते थे कि वेदों के अनुसार सर्वोत्तम ब्रह्मचर्य 48 वर्ष का माना जाता है। इसके लिए इन्होंने पत्नी को साथ लेकर हिमालय की कन्दराओं में 12 वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक तप किया। महाभारत में आता है-

'ब्रह्मचर्य महद्घोरं तीर्त्वाद्वादश वार्षिकम्।
हिमवत्पार्श्वअभ्येत्य यो मया तपसार्जितः।।
समान व्रत चारिण्यां रूक्मिण्यां योऽन्वजायः।
सनत्कुमार सम् तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुतः।।

श्री कृष्ण कहते हैं-हिमालय की गोद में मैंने और रूक्मिणी ने 12 वर्ष तक कठोर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए जो तप किया था, उसी का परिणाम था कि हमें सनत्कुमार के समान प्रद्युम्न नाम का तेजस्वी पुत्र मिला। कैसा विचित्र विरोधाभास है कि भागवत पुराण का कृष्ण पर स्त्रियों के साथ मटकी फोड़ बइंया मरोड़ जैसी अश्लील हरकतें करता है, रास रचाता है, कपड़े चुराता है और महाभारत का कृष्ण अपनी विवाहित पत्नी के साथ 12 वर्ष तक कठोर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए तपस्या करता है। भागवत पुराण के लेखक पं. बोपदेव ने सदाचार से हीन, वासना की कुण्डित भाव-ग्रन्थियों को श्री कृष्ण जैसे संयमी, सदाचारी और पावन पुरुष के नाम से परोसकर भारत का ही नहीं सम्पूर्ण

मानवता का जितना अहित किया है, उतना किसी दूसरे पुरुष ने किसी दूसरे ढंग से नहीं किया। हमें पुराणों के इस मिथ्या प्रपञ्च से निकल कर महर्षि व्यास ने महाभारत में उनके जिस निष्कलंक चरित्र का चित्रण किया है, उसे स्वीकार करना होगा।

गीता में योगिराज श्रीकृष्ण कहते हैं-'**मद् भक्तं एतत् विज्ञेय मद् भावाय उपपद्यते**' (13.18) अर्थात् मेरे भक्त इतना जान लें कि वे मेरे भावों को प्राप्त हों, यानि जैसा मैं हूँ वैसे बनें। रामायण लिखने का उद्देश्य प्रकट करते हुए बाल्मीकि जी लिखते हैं-'**रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न तु रावणादिवत्।**'' उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूँ कि आने वाली पीढियाँ राम की तरह व्यवहार करें, रावण की तरह नहीं। विवेकशील बन्धुओं। हमारी वैदिक परम्परा 'असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय' की रही है। हमें बहुत गहराई से सोचना होगा कि जब श्री कृष्ण स्वयं यह कहते हैं कि मेरे भक्त मेरे भावों को प्राप्त हों, तब हम पुराणकार के कृष्ण के भावों को स्वीकार करें या महाभारत के श्री कृष्ण को? इसे दुर्भाग्य कहें या मानसिक पतन की हमने महाभारत के उज्ज्वल चरित्र वाले श्री कृष्ण को भुलाकर, उनकी धर्म पत्नी रूक्मिणी को हटाकर उसके स्थान पर पुराणकार द्वारा कल्पित राधानाम की स्त्री को साथ जोड़कर एक ऐसे कृष्ण को जन मन में बसा दिया जिसे सभ्य समाज स्वीकार नहीं कर सकता।

आज आवश्यकता है कि हम महाभारत के श्रीकृष्ण के महान आदर्शों को जीवन में अपनाएं। आज आवश्यकता है उस कृष्ण की, जो अन्याय व अत्याचार करने पर सगे मामा कंस को मारने में संकोच नहीं करता। आज हमें वह कृष्ण चाहिए, जो जरासन्ध जैसे प्रबल शत्रु को अपने नीति कौशल से खून की एक बूंद बहाए बिना उसके घर में जाकर समाप्त कर सकें। आज हमारा आदर्श वह कृष्ण होना चाहिए जो परिवार व सगे सम्बन्धियों के मोह से ग्रस्त होकर कर्त्तव्य से मुँह मोड़ने वाले जन मानस को गीता का ज्ञान देकर समझा सके कि सज्जन ही स्वजन है। अन्याय और अत्याचार करने वाले अथवा उनके पक्षधर कभी किसी के सगे नहीं होते। आज हमें ऐसा कृष्ण चाहिए जो दुष्ट दुर्योधन को सत्य स्वीकार न करने पर उसी की सभा में खड़ा होकर फटकार सके। अहह क्या पवित्र सदाचार था। श्री कृष्ण, कितना महान था उसका व्यक्तित्व और हमने उसे क्या बना दिया?

कुछ लोग श्री कृष्ण को युद्ध-प्रिय कहते हैं। उनका मानता है कि श्री कृष्ण का सारा जीवन लड़ने-लड़ाने में ही गया। कभी किसी ने उनके हृदय में झाँककर मानवीय करूणा के दर्शन नहीं किए। दुर्योधन को समझाते हुए श्री कृष्ण कहते हैं-'भाई! एक महान कुल में पैदा हुए हो, विद्वान हो, वीर हो, फिर शील क्यों कुलहीनों जैसा दिखाते हो। भाइयों से व्यर्थ कर वैर और पराये लोगों के सहारे इतना गर्व? युद्ध हुआ तो तुम्हें सभी कुल घातक कहेंगे।'' जब वह न माना तो श्री कृष्ण ने भरी सभा में घृतराष्ट्र से जो प्रार्थना की, वह विश्व इतिहास की अमूल्य धरोहर है। श्री कृष्ण कहते हैं-'इस समय भारत वर्ष में आपका कुल विद्याशील, दयालुता, सरलता व सत्य व्यवहार के लिए सर्वश्रेष्ठ है। वृद्ध होने से आप इसके आधार है, परन्तु आपकी सन्तान बिगड़ रही है। विमल आचार के निष्कलंक आर्य लोग आपस में लड़कर मर जाएंगे। इन्हें बचाइए महाराज। पाण्डव भी तो आपके लिए ही हैं, बचपन से आपके पास ही पले हैं, वही स्नेह दृष्टि उनमें रखिए।'' थोड़ी कठोरता दिखते हुए श्री कृष्ण कहते हैं-कि इस दुराचारी दुष्ट को दुःशासन, कर्ण और शकुनि के साथ पाण्डवों को सौंप दो या मार डालो। एक की दुष्टता का परिणाम सारा संसार क्यों भोगे? हमारे कुल में कंस ऐसा ही हुआ था, हमने मार डाला। दुष्टता के सामने शिष्टता जब निराश हो गई तो अपनी करूणाा भरी व्यथा महात्मा विदुर के सामने रखते हुए श्री कृष्ण कहते हैं-'दुर्योधन की दुष्टता का मुझे ज्ञान है, परन्तु मैं सारी पृथ्वी को रक्त में सनी हुई नहीं देख सकता। संसार पर कैसी भयंकर विपत्ति आएगी, ऐसे में करोड़ों लोगों को मृत्यु के मुंह से खींच लेना बड़ा पुण्य का काम होगा। जो मित्र को संकट का शिकार होते देखकर नहीं बचाता वह क्रूर है''

ये है श्री कृष्ण के हृदय की करूणा। उनका बुद्धि कौशल महाभारत युद्ध से स्पष्ट सबके सामने है। श्री कृष्ण का ऐसा पावन आदर्श हम स्वयं स्वीकार करें और सबके सामने भी रखें।

मो- 09971171797

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 5000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

राष्ट्रोन्नति की वैदिक विचारधारा

❒ डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

वेद एवं वैदिक शास्त्रों में व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति हेतु जो भावना व्यक्त की गई है वैसी अन्यत्र नहीं मिलती। वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना में राष्ट्र व मानव जाति के उत्थान हेतु जो श्रेष्ठ कार्य होने चाहिए गली प्रकार से प्रकाश डाला गया है।

ओ३म् आ ब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रहमवर्चसी जायताम्।
आराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो,
जायताम्। दोग्धी धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः
पुर्रान्धिर्योषो जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य
यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः
पर्जन्यो वर्षतु, फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्
योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ यजु. 22/22

ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि हे परमात्मन् हमारे राष्ट्र में ब्रह्म तेज से तेजस्वी ब्राह्मण उत्पन्न हों। वाण आदि अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण दूर तक निशाना बीधने वाले तथा शत्रुओं को अत्यन्त पीड़ित करने वाले दस सहस्र सैनिकों से अकेले युद्ध करने वाले महारथी शूरवीर क्षत्रिय उत्पन्न हों। खूब दूध देने वाली गायें उत्पन्न हों। शीघ्रगामी घोड़े उत्पन्न हों, भार ढोने में समर्थ बैल उत्पन्न हों। नगर एवं राष्ट्र को धारण करने वाली स्त्रियां उत्पन्न हों। इस दिव्य प्रजाजन के शत्रुओं को विदीर्ण करनेवाला शूरवीर रथ में बैठने वाला योद्धा जयशील सभाओं में जाने योग्य, सभ्य बोलने में मनुष्य उत्पन्न हों। हमारे लिए जब-जब हमारी कामना हो तब तब बादल वर्षा करें, इच्छानुसार वृष्टि हो। अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि न हो। हमारे लिए औषधियां बहुत फल वाली होकर पका करें तथा हमारे लिए अप्राप्त ऐश्वर्य की प्राप्ति और प्राप्त ऐश्वर्य को रक्षा एवं समृद्धि सिद्ध हो।

उक्त वैदिक प्रार्थना में राष्ट्र भक्ति के प्रति समर्पण की भावना का प्रकाश किया है ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि हमारे राष्ट्र में राष्ट्र के निवासी अपने अपने कर्त्तव्य कार्य में निपुण क्षत्रिय धनुर्विद्या में वाज तथा अस्त्र शस्त्र चलाने में तेज हों और दस सहस्र सैनिकों से युद्ध करने में सक्षम हों। यही तो था प्राचीन काल का इतिहास उठा कर अवलोकन करें। अभिमन्यु ने किस प्रकार से चक्रव्यूह को तोड़ा था उसके विरूद्ध भीष्म दुर्योधन की पूरी सेना खड़ी थी और वह एक अकेला क्षत्रिय बालक युद्ध करता रहा न कोई डर न संकोच दस से भी अधिक की बल शाली शत्रु सेना थी। अपने आप को बलिदान कर दिया उस वीर बालक ने ऐसे क्षत्रिय जिस राष्ट्र में हों। वह राष्ट्र सदैव सूर्य की भांति चमकता रहेगा दमकता रहेगा। ऐसा ही था चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य जिसने निर्धन सी कुटिया से निकल कर सिकंदर की सेना को अकेले ने ही धूल चटा दी थी और वही निर्भीक शूरवीर बलवान बुद्धिमान बालक चन्द्रगुप्त चक्रवर्ती शासक बना। संग्राम सिंह जिसे राजा सांगा भी कहते थे। अपनी छोटी सी सेना के साथ बावर की विशाल सेना से लड़ा और खानवा के मैदान में उसे मार भगाया तीन बार बावर पूँछ दवा कर भागा था और अन्त में भी जब सांगा की सेना समाप्त हो गई शूरवीरों की भाँति लड़ता ही रहा था। उसने सहस्रों युद्ध लड़े उसके शरीर पर शस्त्रों के सियासी घाव थे। उसने कभी हार नहीं मानी और मातृ भूमि के लिए बलिदान हो गया। वैसा ही शौर्य प्रतापी शासक, महाराणा प्रताप का था। अकबर की विशाल सेना से जो जीवन भर जंगलों में रह कर टक्कर लेता रहा। हल्दी घाटी का युद्ध उसकी शौर्य बहादुरी की एक मिसाल है।

यही प्रार्थना ईश्वर से की गई है और प्रार्थना के अनुसार ही हमारे क्षत्रिय होते थे जो शूरवीर बलवान तो होते ही थे मर्यादा पालक भी थे। वचन पर मर मिटने वाले होते थे राम ऐसे ही ही थे। जिन्होंने मर्यादाओं का वेदोक्त पालन किया। एक राजा कैसा हो एक पिता कैसा हो एक भाई कैसा हो एक पुत्र कैसा हो, प्रजा की रक्षा करने वाला, शत्रु के साथ व्यवहार करने वाला कैसा हो। मित्र सेवक आदि सबके साथ किस मर्यादा का पालन करना चाहिए। प्रजा को दुखी देखकर राजा की भूख प्यास दूर चली जाती है। प्रजा के लिए सुख देने का कर्त्तव्य राजा का होता है उसके लिए अपनी पत्नी पुत्र प्रजा सब एक समान होते हैं, ऐसा मर्यादा पुरुषोत्तम राम में मिलता है।

इतिहास का निर्माण ही श्रेष्ठ पुरुषों के प्रयत्न से होता है और हमारे ऐतिहासिक महान पुरुषों की श्रेष्ठता का कारण था उनकी प्रारम्भ से ही अच्छी शिक्षा, संस्कार व वेद ज्ञान से परिपूर्णता वेदानुसार आचरण करते थे तभी राष्ट्र की उन्नति के प्रति समर्पित होते थे।

ब्राह्मण चाणक्य विदुर जैसे होते थे जहां अकेला ही राष्ट्र को अभाव में भी उन्नति की ओर से ले जाये, कम से कम बल द्वारा बड़े कार्य करा सके, तर्क विद्या का धनी हो। शत्रु को परास्त करने में बुद्धि से काम ले, धैर्यवान हो जिसको वेद विद्या का पूर्ण ज्ञान हो, राष्ट्र के प्रति समर्पित हो। मार्ग दर्शक हो, विपदा के समय राष्ट्र व जन की हानि न होने दे। प्रार्थना में कहा है कि ब्राह्मण व क्षत्रिय तो ब्रह्म ज्ञानी व तेज बल धारी हों ही गायें दुग्धवाली हो। कृषि के लिए बैल समर्थ हों। योद्धा सदैव युद्ध में विजय प्राप्त करने वाले हो। मनुष्य ऐसे हों जो सभ्य बोलने वाले हों। सदाचारी हों जैसा वाणी में हो। वैसा ही हृदय में हो स्त्रियां प्रियाचरणी हों सन्तानों को श्रेष्ठ संस्कार देने वाली हो जिससे प्रजा श्रेष्ठ हो। जब उत्तम गुण व आचरण वाले प्रजाजन होंगे तब नगर भी श्रेष्ठ होगा। ऐसा भावना यजुर्वेद के इस मन्त्र में दी गई है।

इसके साथ यह भी बताया है कि पर्यावरण हमारे अनुकूल हो समय पर वर्षा हो, आंधी तुफान आदि न आएं क्योंकि इनसे हानि होती है। आज वनों का कटान लगातार चल रहा है उपजाऊ पृथ्वी पर भी धुआं व रासायनिक पदार्थ एवं जहरीली गैस छोड़ने वाले कारखाने लगते जा रहे हैं जिनसे विषैले पदार्थ निकल कर वायु मिट्टी एव धरती के जल में घुल कर मनुष्य को रोग ग्रस्त बना रहे हैं। कैंसर, तपेदिक, थायरायड एवं मधुमेह, उच्च रक्तचाप, बेचैनी घबराहट एवं त्वचा विकारों में वृद्धि हो रही है। आज गाय, भैंस को जो चारा दिया जा रहा है वह कीटनाशक व रासायनिक उर्वरकों से दूषित हो चुका है इस दूध को पीने वालों को भी दुष्परिणामों को भोगना पड़ रहा है दूध देने वाले पशुओं को आक्सीटोसिन के सूचिवेध दिए जाते हैं जिनका दुष्प्रभाव बच्चों पर होता है। बच्चों में समय से पूर्व (सैकण्डरी सैक्ससुअल करैक्टर) यौवनावस्था के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। फल सब्जी व अनाज आदि में भी रसायनों, कीटनाशकों आदि का भरपूर प्रयोग होता है जिससे भयानक रोगों से मनुष्य पीड़ित हो रहा है। अनाज व फलों औषधियाँ की शुद्धता पवित्रता पर ध्यान दिया जाता था।

प्राचीन काल में इसीलिए विद्वान ऋषि मुनि भौतिक व प्रमाद के साधनों

के सम्यक प्रयोगों से बचते थे ऐसा नहीं कि वह जानते नहीं थे वह आग्नेयास्त्र, सौम्यास्त्र, प्रक्षेपास्त्र, जलयान, वायुयान सभी का निर्माण करते थे परन्तु मुख्य रूप से, वातावरण अर्थात् पर्यावरण व मनुष्य के स्वास्थ्य का ध्यान अधिक रखते थे इसलिए अप्राकृतिक साधनों प्रमाद के साधनों का प्रयोग नहीं करते थे। उनकी बुद्धि ज्ञान से परिपूर्ण होती थी। वाणी में सत्य होता था आचरण का विशेष ध्यान था। समाज व नगर की व्यवस्था विधिवत होती थी। मनुष्य का जीवन भी वर्ण व आश्रमों में 'व्यवस्थित रूप से होता था। संस्कारों का विशेष महत्व होता था। हवन यज्ञ घर-घर प्रजाजनों के यहां नगर से लेकर राजा महाराजाओं के यहां भी हुआ करते थे। औषधियों व वनस्पतियों अनाज व फलों के वाग बगीचों का विशेष ध्यान रखा जाता था।

मनुष्य सभ्य होते थे। सदैव एक दूसरे का सम्मान करते थे। छोटे बड़ों का सम्मान करते थे। आज की स्थिति देखें तो बड़ी भयानक हो गई है। पहले मनुष्य जब रास्ते में चलता था तो यह देखता था कि कोई मनुष्य मिल जाए तो रास्ता सुगम हो जाएगा। आज मनुष्य कहीं जा रहा हो तो डरता है कि कहीं कोई आदमी न मिल जाए। आदमी आदमी से भयभीत है। यदि किसी को कोई परेशानी है तो लोग मूक दर्शक बने रहते हैं सहायता नहीं करते। अन्यायी दुष्ट लोग रास्ते में व्यक्तियों महिलाओं के साथ दुराचरण कर जाते हैं और चलने वाले लोग बोलते भी नहीं। रेल बस आदि में सीट पूरी घेरकर बैठे रहते हैं कोई वृद्ध या महिला अथवा रोगी आ जाय तब भी सीट नहीं देते। आज चारों ओर रिश्वत खोरी कमीशन खोरी का बोलवाला है। दहेज लोभियों के मुँह फटे हुए है, लड़की का सौदा करते हैं उनके मोल भाव किए जाते हैं। पत्नी पति भाई-भाई के झगड़े यह राष्ट्र प्रेम से विरुद्ध है। राष्ट्र प्रेम वही है जहां प्रेम सद्व्यवहार सदा चरण हो। व्यक्ति एक दूसरे के सुख दुख में सहायक हों, एक दूसरे के कष्ट का पूरा ध्यान रखें। यह भावना केवल सगे सम्बन्धियों जान पहचान वालों के लिए ही नहीं अन्जानों के लिए भी होनी चाहिए, परन्तु आज लोग अन्जान अपरिचित से घबराते हैं क्योंकि अपरिचित कोई असभ्य, दुष्ट प्रवृत्ति व्यक्ति हो सकता है दुराचारी हो सकता है आज आदमी आदमी का विश्वास खो चुका है परन्तु वेद ज्ञान ऐसा स्रोत है जहां से मनुष्य श्रेष्ठ निर्माण होकर ही निकलते हैं। प्राचीन काल में वेद ज्ञान के स्रोत थे गुरुकुल, आश्रम, ऋषि, वेद के विद्वान माता-पिता परन्तु आज वह स्रोत सिमटते जा रहे हैं। अंग्रेजी विद्यालय व शिक्षा का चलन बढ़ता ही जा रहा है जहां न सदाचार है न सभ्यता न कोई मर्यादा। इसलिए आज आदमी आदमी से डरता है और फलस्वरूप लूटमार, बलात्कार, यौनापराध, शोषण, भ्रष्टाचार बढ़ते ही जा रहे हैं।

वैदिक शिक्षा में ही राष्ट्र प्रेम की भावना है। संस्कृत में जीवन का ज्ञान है। संस्कार व सभ्यता का निर्माण है मानवता का निर्माण है। बस यही तो है हमारी परातन वैदिक प्रार्थना में जो मनुष्य वातावरण व समाज राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाती है। संगठित करने वाली शिक्षा है। मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाला ज्ञान है दुराचार से दूर रहने की भावना है। इसमें ईर्ष्या विरोध छलकपट का नाम भी नहीं जहां सभी शुभ व श्रेष्ठ गुण है। सभ्य व श्रेष्ठता का निर्माण होता है वैसी हमारी वैदिक प्रार्थना से मिलता है यही प्रार्थना राष्ट्र को एक सूत्र में बांधती है।

इस प्रार्थना को विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को स्वर सहित ज्ञान कराया जाय। इसका भाव समझाया जाय तो राष्ट्र निर्माण में एक श्रेष्ठ कार्य होगा।

- चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा-203131

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

स्वतन्त्रता दिवस का लक्ष्य

❑ प्रो. चन्द्र प्रकाश आर्य

भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्र हुआ और 26 जनवरी 1950 को उसका संविधान बना। तबसे लेकर आज तक देश राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में निरन्तर उन्नति की ओर बढ़ रहा है।

विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र के चुनाव, लोकसभा या संसद के चुनाव लगातार सम्पन्न हो रहे हैं। आज लोकसभा की अध्यक्ष एक महिला है। कांग्रेस की अध्यक्ष भी महिला है, दिल्ली की मुख्यमन्त्री भी महिला है। सूचना तकनीकी और कम्प्यूटर, साईंस के क्षेत्र में भारत अग्रणी देशों में है। इससे (ISRO)के वैज्ञानिकों ने चन्द्रयान भेजकर चांद पर भी अपना परचम लहरा दिया है। शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार बनाया जा रहा है। उधर सेना के जवान दिन-रात देश की सीमाओं की सुरक्षा में लगे हैं। आने वाले समय में भारत विश्व की एक महाशक्ति, आर्थिक शक्ति बनने जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ में सुरक्षा परिषद् में भारत की स्थायी सीट की दावेदारी बढ़ी है। पंचवर्षीय के माध्यम से देश लगातार उन्नति की ओर बढ़ रहा है। किन्तु घोटाले जारी हैं। भ्रष्टाचार राष्ट्र की जड़ों को खोखला कर रहा है। मन्त्री, राजनेता भी अछूते नहीं? ताजा उदाहरण कॉमनवेल्थ गेम्स घोटाला है।

फिर इन योजनाओं का लाभ सब लोगों को नहीं मिला है। गरीबी, बेरोजगारी के साथ देश में भुखमरी बढ़ती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में 22 करोड़ लोग भुखमरी का शिकार है। प्रधानमन्त्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् की रिपोर्ट के अनुसार देश के 37.2 प्रतिशत लोग अर्थात् 40-41 करोड़ गरीब रेखा से नीचे का जीवन जीते हैं। योजना आयोग द्वारा संशोधित गरीबी रेखा आकलन पद्धति के अनुसार इसी सलाहकार परिषद् के अध्यक्ष सुरेश तेंदुलकर के मत में 41.8 यानि 45 करोड़ लोग प्रतिमास प्रति व्यक्ति 447 रूपये पर गुजारा करते है अर्थात् 45 करोड़ लोगों की आय प्रति दिन 15 रूपए भी नहीं है। पन्द्रह रूपए में रोजाना पेट भी नहीं भरा जा सकता। यह गरीबी रेखा है या भुखमरी रेखा? वास्तविक गरीबी रेखा में तो 80 करोड़ से ऊपर लोग है। ऊपर से भयानक मंहगाई मार जारी है। खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमते गरीबों की घटती क्रयशक्ति के कारण गरीबी और भुखमरी पहले से अधिक हो गई है। चीनी हो या आलू, सभी की कीमतें दोगुनी से ज्यादा हो गई है, सब्जियों के भाव 50 प्रतिशत से उपर है। दालें भी 100/- रूपये से अधिक के आस-पास जा रही हैं। पिछले छः महीनों से खाद्य पदार्थों की कीमतें जिस तेजी से बढ़ी हैं, उससे आम आदमी ही नहीं किन्तु मध्यम वर्ग और उच्च मध्यमवर्ग के लोग भी परेशान हैं। पिछले एक साल में ही कई खाद्य पदार्थों की कीमतें दोगुनी हो गई हैं। ऐसे में जनता, गरीब आदमी जाए तो कहाँ जाए? इस महंगाई को रोकना केन्द्र सरकार और खाद्यमन्त्री, भारत सरकार का काम है, किन्तु असफल है। सरकार मंहगाई को नियंत्रित करने के लिए सख्त कदम उठायें। तभी जाकर लोगों को आजादी खुशियां मिलेगी। लोगों की आर्थिक दुर्दशा दूर किए बिना, सब तक आर्थिक विकास का लाभ पहुंचाये बिना स्वतन्त्रता दिवस की सार्थकता कैसे हो सकती है? सरकार के साथ-साथ राजनेताओं/सांसदों एवं जनप्रतिनिधियों की भी जिम्मेवारी है कि वे गरीब जनता की भावनाओं को समझें, उनकी चिंताओं/पीड़ाओं को, दु:ख-दर्द को सरकार तक पहुंचायें न कि संसद में अनुपस्थित रहकर या संसद में हंगाम करके, संसद को ठप्प करके उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचायें/उनके दर्द पर नमक न छिड़कें। आखिर ये जनप्रतिनिधि जनता के लिए ही तो है? जनता ने ही इनको चुना है। देश में अनाज गोदामों में/खुले में सड़ रहा है परन्तु सरकार, मन्त्री को इसे भूखी जनता तक पहुंचाने में कोई रूचि नहीं? आर्थिक खुशहाली के साथ-साथ गणतन्त्र में सबकी सामाजिक खुशहाली हो, सबको सामाजिक समानता एवं न्याय मिले। रूचिका कांड इसका उदाहरण है। 19साल के बाद यह मामला दुबारा न्याय की दहलीज पर है। वह भी समाचार पत्रों और टी.वी. चैनलों की बदौलत। तब जाकर राज्य सरकार यहां तक कि केन्द्र सरकार (गृह मन्त्रालय) हरकत में आई और सी.बी.आइ. ने अब मामले को अपने हाथ में ले लिया है। पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट भी अब मामले की गहराई तक जाना चाहती है। कितने ही अधिकारी/अफसर/राजनेता इसमें लिप्त है? स्व. रूचिका के पिता और भाई पर इतने सालों में क्या बीती होगी? उसकी सहेली आराधना और उसके माता-पिता मधु और आनन्द प्रकाश ने इस अन्याय के खिलाफ अब तक उसका केस लड़ने में जो हिम्मत दिखाई है, वह समाज के लिए मार्गदर्शक है। लोकतन्त्र में सबको सामाजिक न्याय मिले, यह सरकार और न्यायालयों की जिम्मेदारी है। अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना हम सबकी जिम्मेदारी है। राठौड़ को डेढ़ साल की जेल तथा आगे की कार्यवाही पर उच्च न्यायालय में सुनवाई जारी है। ऐसे कई कांड हैं।

सामाजिक न्याय के संदर्भ में एक अन्य ताजा घटना का जिक्र करना चाहूंगा। 'तुमुल तूफानी' (24-30 दिस. 2009, बड़ा बाजार, चदौसी-202412) पृ. 1-2 के समाचार के अनुसार ग्राम नंगला भाई, पुलिस थाना, नदबई, जि. भरतपुर की एक दलित बालिका सोनम (8 वर्ष) सड़क पर खेल रही थी, उसको जान्दू (जाट) नामक युवक ने साईकिल से टक्कर मार दी और बच्ची को चोट लगी। इस पर बच्ची की मां लज्जा से कहासुनी होने पर उसको जान से मारने की धमकी देकर वह युवक वहां से चला गया। घटना के थोड़ी देर बाद उसी जाति के तीन-चार लोगों ने पीड़ित परिवार पर फरसों आदि से प्राणघातक हमला कर दिया जिसमें श्रीमती गिर्राजी की मौत हो गई तथा श्रीमती लज्जा की हालत चिन्ताजनक है। आरोपियों की राजनीति में पहुंच है, इसलिए उनके खिलाफ अभी तक प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ.आई.आर.) दर्ज नहीं हुई? पुलिस प्रशासन मामले को दबाने में लगा है। इससे पहले 1992 में भी इसी उंची जाति के आरोपियों ने 32 दलितों की दिन दहाड़े हत्या कर दी थी। इस जघन्य कांड की शिकायत दलित अधिकार केन्द्र के मुख्य संरक्षक पी.एल. मीमरोठ ने राजस्थान के मुख्यमन्त्री, गृहमन्त्री राजस्थान तथा पुलिस महानिदेशक, पुलिस अधीक्षक भरतपुर, जिला कलेक्टर भरतपुर से की है। जबकि गणतंत्र दिवस को घोषित

संविधान में दलितों को समान अधिकार दिए गए है। क्या हम संविधान का इसी तरह सम्मान कर रहे हैं? डॉ. अम्बेडकर ने अपना सारा जीवन देश में-संवैधानिक एवं सामाजिक समानता एवं एकता कायम करने में लगा दिया और हम इस प्रकार उनकी भावनाओं का आदर कर रहे हैं। यह गणतन्त्र एवं स्वतन्त्रता दिवस का अपमान है। मिर्चपुर कांड (हरियाणा) आदि अन्य उदाहरण हैं।

हमें स्वतन्त्रता दिवस पर गणतन्त्र (भारत) में रहने वाले सभी लोगां को, सौ करोड़ से ऊपर जनता को राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक खुशहाली एवं समानता तथा सुरक्षा प्रदान करनी होगी। यह हम सबकी सामूहिक जिम्मेवारी है। वेद ने संगठन सूक्त में, बहुत पहले ही कहा था कि हम मिलकर चलें, मिलकर बोलें। हमारे मन एक हों, वेद पुन: कहता है कि हमारे विचार एक हों, हमारे हृदय एक समान हों। हमारे मन समान हों (ऋग्वेद-संगठन सूक्त)। वेद में सबकी सामाजिक, आर्थिक आदि सर्वविध समानता का वर्णन किया गया है। हमें इस ओर ध्यान देना होगा। क्या यह भारत सरकार और राज्य सरकारों की जिम्मेदारी नहीं है।

– 432/8, आर्य निवास, करनाल।

ऋषि जन्मभूमि की ऋषि भक्तों से अपील

टंकारा स्थित ऋषि जन्म गृह जहाँ बाजार से तंग गली से होकर ऋषि भक्तों को जन्म गृह तक पहुंचना होता है। आए हुए कई गणमान्य व्यक्तियों ने आगन्तुक पुस्तिका में इस विषय की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि जन्म स्थान का मुख्य द्वार भव्य एवं दर्शनीय होना चाहिए। इस विषय में जानकारी प्राप्त की तो मुख्य द्वार को चौडा करने के लिए बाजार में से एक दुकान और दुकान के पीछे का एक मकान जिसमें कोई व्यक्ति नहीं रहता, को ट्रस्ट द्वारा खरीदना होगा।

इस वर्ष टंकारा की वार्षिक बैठक में इन्हें दान स्वरूप राशि प्राप्त कर क्रय करने का निश्चय किया गया और इस संदर्भ में श्री हंसमुख परमार को उपरोक्त मकान मालिकों से बातचीत करने हेतु अधिकृत किया गया। उनके अनुसार 14,51,000/- रूपये में गली के नुक्कड़ पर सबसे प्रथम दुकान प्राप्त हो रही है, हम 2,00,000/- अग्रिम दे उसे पक्का कर रहे हैं।

आपकी ऋषिभूमि के प्रति अपार श्रद्धा है इस कारण आपसे करबद्ध निवेदन है कि आप अपनी ओर से अपनी संस्था की ओर से एवं अन्य ऋषि भक्तों से इस मद में अधिक से अधिक धनराशि एकत्र करवाने की कृपा करेंगे। आप यह धनराशि **चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'' के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा टंकारा के पते पर भिजवा सकते हैं। टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है। सहयोग की प्रतिक्षा में।**

सत्यानन्द मुंजाल	शिवराजवती आर्य	रामनाथ सहगल	योगेश मुंजाल
प्रधान	उपप्रधान	मन्त्री	संयोजक

ऋषि जन्म गृह विस्तार समन्वय समिति

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

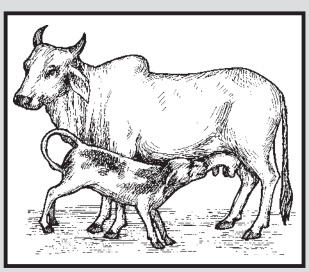

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

WHY DOESN'T GOD ANSWER OUR PRAYERS?

❒ **Ram Krishan Sharma**

Does God really mean it when He says He will give us what we ask for? Veda texts come to our minds, such as Yajur 3.50, "Ask, and it will be given to you"... Will He really answer when we call? yajur4.15 "Before you call I will answer, while you are still speaking, I will hear." Why at times does it appear that God ignores us when we pray to Him, asking Him to help when we have a serious problem? Many have prayed for God to intervene and solve a problem that they are struggling with, but sometimes God's apparent answer is silence.

God knows what's best: Even when we feel that God is not answering our prayers, you can always know God is a God of love. The Vedas tells us He loves us. '"For God so LOVED the world"

God created us and knows infinitely more than we know. He knows what is best for us, and what would not be good for us. If you have children, when they were very small, sometimes they asked for things that would not be good for them, or would harm them. For good reasons sometimes parents do not always give their children what they ask for, when they ask for it. Parents give them what is best for them.

It is the same way in our prayers to God. God gives us what is best for us. We are God's children and He gives us what is best for us, and at a time when it is best for us. Our lives must be right with God before He can answer our prayers.

Right way: God has certain conditions that must be met before our prayers can be answered. One of the first, is we feel our need of help from Him. God says, "I will pour water upon him that is thirsty, and floods upon the dry ground." The heart must be open to the Spirit's influence, or God's blessing cannot be received. One cannot pour water into a cup that is already full.

Right heart: If we have cherished sins in our lives, and refuse to give them up, or if we are doing things we should not be doing, and are disobeying Him, we cannot expect Him to answer our prayers. He cannot answer our prayers if we have sins in our lives that are unconfessed or if we are hanging on to cherished sins. Also, if we refuse to forgive others who have wronged us, God cannot hear us.

His time, His will: God is a God of love, and He is interested in every detail of our lives. He hears our prayers, and answers every sincere prayer if we meet His conditions. We must not expect that every answer will be "yes", since we are sinners and do not always ask what is best for us. Sometimes His answer is "No' and sometimes it is "wait." We need to end each prayer with, "Not my will but Your will." Even if we are sincerely doing God's will, and to the best of our ability, following His will for us, He may see that it is best for us not for Him to say "yes" at this time. We must continue trusting Him, regardless of His answer at the moment.

God's timetable is not the same as ours. He knows better than we do when is the best time for our prayers to be answered. God is eternal and does not measure time as we do. "Beloved, do not forget this one thing, that with the Lord one day is as a thousand years, and a thousand years as one day."

For God to give us what we ask for, we must ask "according to His will." Faith cannot take the place of "asking according to God's will." if we ask anything according to His will, He hears us." If you do not ask according to God's will, it is not real faith in God. If God's answer is "No" we still must be willing to wait patiently, and trust God to answer in his own way and in His timing. Trust God, even though you may at the moment feel he is not near and has abandoned you.

"You whom I have taken from the ends of the earth, and called from its farthest regions, and said to you, You are my devotee, I have chosen you, and have not cast you away. Fear not for I am with you; Yes, I will help you, I will uphold you with My righteous right hand."

If we have faith and sincerely trust God, we will not be concerned as to whether the answer is "wait" or the answer is "no" or "yes." We must just trust, and wait and see if God in His timing will see fit to answer as we have requested, or perhaps He has something better in mind for us. Remember your prayer should end with "Not my will, God, but Your will." . "Trust in the Lord with all thine heart; and lean not unto thine own understanding. In all the ways acknowledge Him, and He shall direct the paths."

जगे जगे देश यह हमारा

स्वतन्त्रता-स्वर्ग में पिता है, जगे जगे देश यह हमारा!
अशंक मन हो, उठा हुआ शिर,
स्वतन्त्र हो पूर्ण ज्ञान जिसमें
जहाँ घरों की न भित्तियाँ ये करें जगत् खण्ड खण्ड न्यारा!
सदैव ही सत्य के तले से
जहाँ पिता, शब्द-शब्द निकले
छुए बढ़ा हाथ पूर्णता को जहाँ परिश्रम अथक हमारा!
छिपे भटक कर सुबुद्धि-धारा
न रूढ़ियों के दुरन्त मरू में
विशाल विस्तृत विचार-कृति में लगे जहाँ चित्त, पा सहारा।
स्वतन्त्रता-स्वर्ग में पिता है, जगे जगे देश यह हमारा।।

(आज के आधुनिक मानस वालों के लिए कहेंगे कि जिसे हिन्दू राज्य कह रहे हैं उसका आदर्श विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'चित्त जेथा भयशून्य' शीर्षक गीत में उभरकर सामने आया है। उसी का अनुवाद श्री सुधीन्द्र द्वारा बंगला से अनूदित।)

साभार: चयनिका

(पृष्ठ 1 का शेष)

अपने ही देश में हिन्दु दास बन कर शोषित होते रहे।

अत: दासता और अज्ञानता के अन्धकारमय काल में महर्षि भारतीयों के मसीहा बन कर आये। भारत के भाग्य का सूर्य पुन: उदय हुआ। महर्षि पूर्व राजा राम मोहन राय ने सामाजिक सुधार किये। ब्रह्म समाज की स्थापना की, सतीप्रथा का घोर विरोध किया परन्तु उनका प्रभाव बंगाल तक ही सीमित रहा।

महर्षि बड़े दूरदर्शी थे उन्होंने अपनी दूरदर्शिता से यह जानने का प्रयास किया कि भूतकाल में किन कारणों से देश की वर्तमान स्थिति उत्पन्न हुई। वर्तमान को सुधार कर भविष्य का कैसे निर्माण किया जा सकता है। एक मनोवैज्ञानिक चिकित्सक की तरह रोग का पता लगाया और अनुभव किया कि देश शारीरिक व मानसिक दृष्टि से रोगी है। अनुभव किया अगर मस्तिष्क का ईलाज हो जाएगा तो शरीर स्वत: ही ठीक हो जाएगा। इसीलिए इन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात कर उन्हें जड़ से उखाड़ फैंका। नारी राष्ट्र का आधार है तो युवक राष्ट्र की रीड़ की हड्डी। अत: सब को शिक्षा का अधिकार दिया जिससे युवकों में आत्मविश्वास बढ़ा कि वह सब पढ़ कर विद्वान बन समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर सकते हैं। नारी राष्ट्र का आधार है। नारी शिक्षा प्राप्त कर वेदों तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय कर, सन्तान को सुसंस्कारों से सुसज्जित कर देश को राष्ट्र प्रेमी नागरिक दे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे अध्याय में स्पष्ट किया कि कोई भी माँ बच्चों को भूत प्रेतों के भय से भयभित न करें उन्हें निडर व साहसी बनाएं ताकि बड़े होकर बच्चे शौर्यवान बनें।

स्वामी जी में राष्ट्रीयता की भावना कूट कूट कर भरी थी उन्होंने अपने जीवन का हर पल देश हित में लगा दिया। वह अनेकों बार रोए परन्तु अपने लिए नहीं, देशवासियों की दुर्दशा के लिए।

स्वामी जी ने आर्य समाज संगठन की स्थापना की। उस समय आर्य समाजों के वार्षिक जलसे होते थे उन जलसों में सभी वर्णो के लोग एक पंगत में बैठ कर लंगर की रोटी खाते थे इस प्रकार मानव मानव का भेद मिटा दिया। उन दिनों ऐसा करना तलवार की धार पर चलना था अनेकों ऐसे उदाहरण मिलते है। एकता से राष्ट्र बलवान बनता है। मातृ भाषा हिन्दी राष्ट्रीय एकता की कुंजी है।

19वीं शताब्दी में यूरोप में राष्ट्रवाद का जन्म हुआ। जिसका प्रभाव हमारे अंग्रेजी पढ़े लिखे प्रतिष्ठित व्यक्तियों पर भी पड़ा जैसे राजा राम मोहन राय, दादा भाई नरौजी आदि अन्य भी।

स्वामी जी अंग्रेजी पढ़े लिखे नहीं थे। उनकी राष्ट्रीयता का आधार यूरोप वालों से भिन्न था। स्वामी जी गौरवमयी प्रचीनता के शौदाई थे। उनकी राष्ट्रीयता का आधार वेद तथा गौरवमय विश्ववारों संस्कृति थी। तभी उन्होंने जन साधारण को आह्वान करते हुए कहा वेदों की और लौट चलो। वह सदा स्वराज के प्रशंसक रहे। उनके भाष्य में सैकड़ों चक्रवर्ती राजाओं का वर्णन आया है। जब राष्ट्र विचार, भाषा, चिन्तन, धर्म और राज्य में एकता होती है तभी राष्ट्र बलवान बनता है। 1857 की प्रथम क्रान्ति की असफलता पर वह घबराये नहीं, दूसरी क्रान्ति का श्री गणेश कर दिया। यद्यपि उनके जीवन काल में देश आजाद नहीं हुआ परन्तु उनके राष्ट्र प्रेम से प्रेरित शिष्यों व भक्तों ने राष्ट्र को उनके अन्तिम लक्ष्य तक पहुंचा दिया अर्थात् देश आजाद हो गया।

आज स्वतंत्रता की खुली हवा में सांस लेने का जो अवसर हम सब को प्राप्त हुआ है वह सब महर्षि की तपस्या, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, लाला लाजपत राय, पंडित लेखराम, मेधावी तथा अद्भूत प्रतिभा के धनी पंडित गुरुदत्त आदि के त्याग व पुरुषार्थ एवं भगत सिंह, बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, नेताजी सुभाष जैसे लाखों वीरों की शहादत का परिणाम है जिसे हम भूलते जा रहे हैं। जो एक जघन्य पाप है, अपराध है। यह तो भावी पीढ़ी के लिए धरोहर है। जो हमें उनको विरासत में देनी चाहिए परन्तु नहीं दे रहे हैं। तभी हमारी पीढ़ी पथ भ्रष्ट होकर राजधर्म के विरुद्ध कार्य कर रही है। विश्व गुरु कहलाने वाला देश आज विश्व के मानचित्र पर भ्रष्टाचार में दूसरे नम्बर पर है।

महर्षि को देश से इतना प्यार था कि वह चेतावनी के रूप में देशवासियों के लिए एक पैगाम लिख गये जो अमूल है।

''जब किसी जाति के पास धन तथा बल की अति हो जाती है उसे अभिमान आ जाता है वह सदाचार के मानदण्ड से गिर जाता है। उसके बहुत से गुण नष्ट हो जाते हैं। धन के साथ अनेकों बुराइयां आ जाती है, अवगुण जाति को निर्बल बना देते हैं। दूसरी जाति आ कर उसे गुलाम बना देती है। स्वतन्त्र वही रहता है जिसके सदाचार का स्तर ऊंचा हो। आज़ादी सबसे बड़ी नियामत (वरदान) है और ईश्वर यह नियामत उसको देता है जो इस का अधिकारी होता है।''

भारत की गुलामी का प्रारम्भ भी कुछ इन्हीं कारण से हुआ होगा। भारत की वर्तमान दुर्दशा से भारत का बच्चा बच्चा परिचित है, प्रभावित है। सब कुछ सबके सामने घटित हो रहा है। वक्त की चेतावनी की घंटी भी बज रही है। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता है तो बस राष्ट्र धर्म के अनुपालना की।

सत्य है आज हमारे बीच में महर्षि या उनके सम कोई नेतृत्व नहीं है। ऐसे महापुरुष तो युगों युगों में एक बार जन्म लेते हैं। परन्तु दिशा–निर्देश के रूप में आर्य समाज संगठन है, वेद है, आर्ष साहित्य है प्राचीन गौरवमयी संस्कृति है। अरस्तु ने अपने शिष्य सिकन्दर को कहा था जब तुम विश्व–विजेता बन कर लौटो तो मेरे लिए भारत से एक ज्ञानी विद्वान और दूसरा गंगाजल लाना जिस को पीकर वहाँ के लोग तत्व ज्ञानी बन जाते हैं। पूर्वजों की धरोहर के रूप में सद्गुणों का असीम खजाना भारत में मात्र आर्य समाजियों के पास बन्द पड़ा है। आर्य समाज को पुन: संगठित व नियमानुसार बनाने से सब कुछ व्यवस्थित हो सकता है। स्वार्थ को छोड़ो परमार्थ के लिए कार्य करो। नि:स्वार्थ से किया गया परोपकारी कार्य ईश्वरीय होता है। ईश्वर भी यही कार्य करता है। इसीलिए ऐसे परोपकारी व्यक्तियों की ईश्वर सहायता करता है। ऐसे सदगुणी नागरिकों वाला राष्ट्र सदा फलता फूलता तथा यश पाता है। स्वामी जी ने राष्ट्र में परहित, परोपकार किया तभी वह कौम के रहनुमा बनें युगों युगों तक याद रहेंगे।

– फ्लैट न. 101, सौम्य अपार्टमेन्ट, बी–9, ध्रुवमार्ग, तिलकनगर, राजापार्क, जयपुर–4, मो. 9460183872

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

मन की साधना

❒ डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक'

मनुष्य के जीवन में मन का महत्वपूर्ण स्थान है। मन के बिना कोई कार्य नहीं होता। मन ही संकल्प-विकल्प करता, मन ही निश्चय करता, मन ही स्वप्न देखता, मन ही भोग में लगाकर विभिन्न स्वाद ढूँढ़ता और मन ही योग में लगकर आत्मिक आनन्द खोजता है। हार और जीत, सुख और दु:ख, मित्र और शत्रु, बन्धन और मोक्ष, सब मन से ही है। मन ही जीवन को भटकाता और मन ही इसे पार लगाता है। इसलिए मन की साधना करना उत्तम जीवन के लिए आवश्यक है।

भिन्न-भिन्न व्यक्ति एक परिस्थिति में भिन्न-भिन्न व्यवहार करते हैं। उनका व्यवहार उनके मन की स्थिति पर निर्भर करता है। जिन्होंने मन को नहीं साधा, वे सुख को घटाकर दु:ख बढ़ा लेते हैं। जिन्होंने मन को साध लिया है, वे दु:ख को घटाकर सुख बढ़ा लेते है। जिस प्रकार पर्वत पर चढ़ना कठिन है किन्तु चढ़ने के पश्चात् मनुष्य की स्थिति ऊँची हो जाती है, उसी प्रकार मन को साधना कठिन है किन्तु साधने के पश्चात् व्यक्तित्व ऊँचा हो जाता है। ऐसा साधक ही प्रगति और सन्तोष, सफलता और शान्ति, संघर्ष और आनन्द की एक साथ प्राप्ति कर सकता है।

शरीर और मन का सम्बन्ध- शरीर और मन की घनिष्ठ सम्बन्ध है। हम प्राय: देखते हैं कि क्रोध करने पर नेत्र लाल और चेहरा कठोर हो जाता है। अधिक क्रोध करने वाले व्यक्तियों के नेत्रों और चेहरे पर स्थायी रूप से कठोरता आ जाती है। क्रोध मन का गुण है किन्तु शरीर पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार भय मन का गुण है किन्तु भय की अवस्था में शरीर के रोम खड़े हो जाते हैं, हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं और मल-मूत्र भी निकल जाता है। मन में भोजन के प्रति लालसा उत्पन्न हो जाए तो मुँह में पानी भर आता है। प्रियजन से मिलने पर मन प्रसन्न हो तो नेत्रों में चमक आ जाती है, चेहरा खिल उठता है और खाने-पीने की आवश्यकता घट जाती है। प्रियजन की मृत्यु से मन दु:खी हो तो चेहरा मुरझा जाता है, आँखों से आँसू निकल पड़ते हैं और नींद गायब हो जाती है। चिन्ता मन का विषय है किन्तु इससे चेहरा निस्तेज हो जाता है, रक्तचाप बदल जाता है, पाचन-तन्त्र कमजोर हो जाता है और शरीर क्षीण हो जाता है। मन शान्त रहे तो रक्तचाप बदल जाता है, पाचन-तन्त्र कमजोर हो जाता है और शरीर क्षीण हो जाता है। मन शान्त रहे तो रक्तचाप सामान्य रहता है, शरीर के रोग कम होते हैं और आयु लम्बी होती है। इस प्रकार मन के भावों का शरीर पर प्रभाव पड़ता है।

शरीर का भी प्रभाव पड़ता है। उदाहरणार्थ- उत्तेजक पुस्तक पढ़ने और अश्लील चित्र देखने से मन में उत्तेजना आती है। जल की पहुँच शरीर तक है, मन तक नहीं, किन्तु स्नान करने से मन को शान्ति मिलती है। अधिक भोजन करना शरीर का विषय है किन्तु इससे मन बेचैन होता है। नशा करना शरीर का विषय है किन्तु इससे मन अपवित्र हो जाता है। व्यसन का प्रयोग शरीर पर होता है किन्तु इससे मन में चञ्चलता आती है। पेड़ की ठण्डी छाया शरीर पर पड़ती है किन्तु मन भी सुख का अनुभव करता है। नरम गद्दे पर सोना, मधुर संगीत सुनना, स्वादिष्ट भोजन करना, पैर दबवानी आदि शरीर के विषय हैं किन्तु इनसे मन भी सुख पाता है। शरीर रूग्ण रहने लगे तो मन में निराशा का भाव आ जाता है।

इससे स्पष्ट है कि मन की साधना करने के लिए शरीर का रख-रखाव अत्यन्त आवश्यक है। शरीर के समुचित रख-रखाव के साधन निम्नलिखित है:-

भोजन सन्तुलित और निरामिष होना चाहिए- तामसी और नशीले पदार्थ शरीर को हानि पहुँचाते हैं। भोजन की मात्रा भी सन्तुलित होनी चाहिए अर्थात् न अधिक खायें और न ही अधिक भूखे रहें। भोजन करते समय न तो स्वाद के पीछे दौड़ना चाहिए और न ही उपेक्षा भाव अपनाना चाहिए। न खाने के लिए जीना, न जीने के लिए खाना अपितु शरीर को नीरोग और बलिष्ठ रखने के उद्देश्य से समुचित भोजन ग्रहण करना चाहिए।

जल का यथेष्ट सेवन करना चाहिए- जल की कमी से खुश्की, कब्ज, शुगर आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। दूध, छाछ, जूस आदि पेयों का ॠतु एवं आयु के अनुसार पान करना चाहिए। किन्तु चाय, कॉफी एवं ठण्डे पेयों का प्रयोग कम-से-कम करना चाहिए। मद्य एवं नशीले पदार्थों से दूर ही रहें।

वायु का सेवन भी यथेष्ट करें- सामान्यत: लोग हल्की-फुल्की श्वास लेते हैं, भ्रमण नहीं करते और प्राणायाम से भी बचते है। फलस्वरूप फेफड़ों में ताजी एवं पर्याप्त वायु नहीं जा पाती जिससे नजला, जुकाम, टी.वी. आदि रोग हो जाते हैं। अत: प्रात: काल की ताजी वायु का नित्य प्रति सेवन करें और भरपूर श्वास लें।

निद्रा के सेवन में सावधान रहें- निद्रा का कोई विकल्प नहीं है, अत: निद्रा में कमी न करें। अधिक सोने से आलस्य बढ़ता और समय व्यर्थ जाता है, अत: निद्रा को अधिक बढ़ायें भी नहीं। बस आवश्यकतानुार गहरी निद्रा लें, समय से उठ जाये और श्रम-विश्राम में सन्तुलन रखें।

नियमित व्यायाम करें- भाग-दौड़, रस्सी-कूद, कुश्ती आदि में से अपनी रूचि के अनुसार व्यायामों का चयन कर लें। सूर्य-नमस्कार, नृत्य और तैराकी बहुत अच्छे व्यायाम हैं। योगासनों में हलासन, भुजंगासन, सर्वांगासन, धनुरासन, पश्चिमोत्तोनासन, शलभासन, मयूरासन, त्रिकोणासन, वज्रासन, हस्तपादासन, पद्मासन, शवासन आदि बहुत लाभदायक हैं। प्रात: काल लम्बी और रात्रि भोजन के बाद संक्षिप्त सैर भी उपयोगी है।

प्राणायाम का भी विधिपूर्वक अभ्यास करें- इससे फेफड़े स्वस्थ, शरीर सुडौल, मन एकाग्र और बुद्धि तीव्र होती है। प्राणायाम न कर पाने पर गहरी श्वास का अभ्यास कर लें।

संकल्प शक्ति-ईश्वर ने संकल्प से जगत् की रचना की है। गाय संकल्प से बछड़े के लिए दूध स्त्रवित करती है। मनुष्य भी संकल्प से ही ऊँचा उठता है। वस्तुत: मनुष्य अल्पज्ञ, अल्पशक्त एवं अल्पकर्मा है। वह एक जीवन में सब कुछ नहीं पा सकता। उसे उन्हीं वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है जिनके लिए वह संकल्प करके अपना समय, धन एवं बल लगाता है। संकल्प वह मूल है जिस पर कर्म-रूपी वृक्ष खड़ा होता है और जीवन की उन्नति होती है। उपनिषद् में भी कहा गया है- ''संकल्पो बाव मनसो भूयान्'' अर्थात् संकल्प मन से बढ़कर है। कर्म का बीज मनुष्य के मन में और मन की शक्ति उसके संकल्प में है। संकल्प के बल का भान निम्नलिखित वास्तविकताओं से हो जायेगा-

(1) माँ को बालक द्वारा गीले किये गये बिस्तर पर सोने से जुकाम नहीं होता क्योंकि उसका संकल्प उसे बालक के पालन-पोषण में स्वभावत: लगाये रखता है। (2) पुत्री के विवाह के अवसर उन माता-पिता को भी भूख-प्यास नहीं सताती जो सामान्य अवस्था में थोड़ा विलम्ब होने पर भूख-प्यास से व्याकुल हो जाते हैं। (3) युद्ध में विशाल सेनायें संकल्प के

अभाव में पराजित होती और संकल्पबद्ध छोटी सेनायें विजय पाती देखी जाती है। (4) विद्यार्थी पढ़ने के लिए संकल्पबद्ध हो तो प्रकाश की कमी अथवा सर्दी-गर्मी उसके अध्ययन में बाधक नहीं बनती जबकि साधारण व्यक्ति इन प्रतिकूलताओं से थक-हार जाते हैं।

तनिक वर्तमान समाज को देखे। इसमें स्वस्थ, सत्यवादी, सदाचारी, धार्मिक और विद्वान् व्यक्तियों की संख्या रोगी, झूठे, व्यसनी, अधार्मिक और अज्ञानी लोगों से कम और विचारपूर्वक जीने वालों की संख्या बिना विचारे जीने वालों से कम हैं। इससे स्पष्ट है कि संकल्प कम लोग लेते हैं व्यवहार में लोग नव वर्ष, जन्म-दिन, राष्ट्रीय पर्व, किसी महापुरुष की तिथि आदि के अवसर पर संल्प लेते हुए देखे जाते हैं, किन्तु यह संकल्प न होकर इच्छा मात्र होती है। संकल्प हो तो मनुष्य इसे भूले नहीं, इसके विपरीत न चले और संकल्पबद्ध होकर चलता जाए। किन्तु वह तो पुनः पुनः भूलता और संकल्प लेता रहता है। उदाहरण के लिए एक शराबी सैकड़ों बार शराब छोड़ने का संकल्प लेता और अगले दिन तोड़ देता है। क्रोधी मनुष्य प्रतिदिन क्रोध छोड़ने का संकल्प लेता और प्रतिदिन उसे तोड़ देता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि यह संकल्प नहीं और इसमें खड़े रहने का बल नहीं है।

संकल्प में अद्भुत बल होता है जो मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में अडिग रखता है। संकल्प मन को शक्ति देता रहता है। मन में जिस बात का संकल्प हो, मन अधिकांश समय उसी में लगा रहता है। इससे उस पर यथेष्ट चिन्तन-मनन हो जाता है। उसकी अनुकूल एवं प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों के लिए मन तैयार रहता है। मन पूरी एकाग्रता और पूरी भक्ति से उसमें बसा और डूबा रहता है। मन उसके साथ एकाकार हो जाता है। अपने संकल्प के पीछे मनुष्य न थकान देखता है, न राग और न विघ्न-बाधा जबकि अन्य कार्यो में वह थोड़ी सी असुविधा में भी शिकायत करने लगता है। वस्तुतः संकल्प एक कवच है जो आलस्य, लोभ एवं विचलन रूपी वाणों को प्रभावहीन कर देता है।

भर्तृहरि ने उत्तम, मध्यम एवं अधम व्यक्तियों की परिभाषा संकल्प-शक्ति के आधार पर इस प्रकार की है

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति॥

(अर्थात् अधम पुरुष विघ्न के भय से कार्य प्रारम्भ ही नहीं करते, मध्यम पुरुष कार्य प्रारम्भ तो कर देते हैं किन्तु विघ्न आने पर उसे छोड़ देते हैं, उत्तम पुरुष बार-बार विघ्न आने पर भी कार्य को बीच में नहीं छोड़ते और उसे पूरा करके ही दम लेते हैं।) वस्तुतः ये तीन अवस्थायें क्रमशः संकल्प के अभाव, निर्बलता एवं दृढ़ता की अवस्थायें हैं जो उपर्युक्त भेद करती है। दूसरे शब्दों में, दृढ़ संकल्प के धनी व्यक्ति ही उत्तम मनुष्य बन पाते हैं, अन्य नहीं।

सत्य का संकल्प- जिस प्रकार बालक का पोषण माता के दूध से होता है, उसी प्रकार मानवता का पोषण सत्यरूपी माता के दूध से होता है। शास्त्र में कहा गया है-**''सत्ये धर्मः प्रतिष्ठितः''** अर्थात् सत्य के पालन में ही सच्चे धर्म का निवास है। बालक को जीवन में सबसे पहली शिक्षा सत्य बोलने की मिलती है। वह प्रारम्भ में सत्य बोलता भी है। किन्तु सगे सम्बधियों को झूठ बोलता देखकर, लोगों की चतुराई, बहानेबाजी, स्वार्थ एवं सुविधाओं के चक्र में पड़कर वह धीरे-धीरे असत्य बोलने लगता है। ऐसा करते हुए ही वह युवा और वृद्ध हो जाता है। वृद्धावस्था में उसकी अन्तिम शिक्षा भी सत्य बोलने की ही होती है। इस प्रकार जीवन का विस्तार सत्य से सत्य तक है।

असत्य के व्यवहार से मिलावट, बेईमानी, विवाद, दुःख, अशान्ति, अविद्या, पाप एवं पतन होता है। सत्य के आचरण से विश्वास, सफलता, समृद्धि, सुख, शान्ति, विद्या, धर्म एवं उत्थान होता है। अतः समस्त सभ्य एवं शिष्ट जनों को सदा सत्य का ही आचरण करना चाहिए। इसके अन्तर्गत सत्य को जानना, सत्य को सत्य एवं असत्य को असत्य मानना, सत्य को सत्य कहना, असत्य को असत्य कहना, असत्य को सत्य न कहना एवं सत्य को असत्य न कहना, सत्य को प्रिय करके बोलना और सत्य ही करना आदि व्यवहार सम्मलित हैं। हमारे मन में इतनी पवित्रता और दृढ़ता उत्पन्न हो कि हम उपर्युक्तानुसार सत्य का पालन कर सकें। यही मन की वास्तविक साधना है।

- आर्य समाज श्रृंगार नगर, लखनऊ-226005

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। इस वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया हैं कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। **प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं।** इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाएगी और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाएगा। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि घर से जुड़ सकते हैं। इस वर्ष 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है। **सहयोग राशि के साथ अपना नाम, पूरा पता, मोबाइल नम्बर, ई-मेल, व्यवसाय एवम् किस आर्य समाज से संबंधित हैं कि जानकारी अवश्य भेजें। साथ ही आप ऋषि जन्मभूमि को किस प्रकार और सहयोग कर सकते हैं संक्षिप्त में लिखें। टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**	**योगेश मुंजाल (संयोजक)**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	(उप-प्रधाना)	(मन्त्री)	(सहयोगी सदस्य अभियान समिति)

કૃષ્ણાવતાર

પં. રમેશ ચન્દ્ર મહેતા 'ટંકારામિત્ર'
Email:- pt.rammehta@gmail.com

શ્રીમદ્ ભગવદ્ ગીતામાં અનેક સ્થળે શ્રીકૃષ્ણે પરમાત્માની વિભૂતિઓના દર્શન કરાવતા અથવા તો અન્ય કારણોસર પરમાત્મા માટે 'ઉત્તમવચન'નો પ્રયોગ કર્યો છે. જેમકે ***'મચ્ચિતા', 'મયા', 'મત્પરમ્', 'મદાશ્રય', 'મમ',*** ઈત્યાદિ. ૯માં અધ્યાયનો ૪ થો શ્લોક આનું પ્રમાણ છે. ***(મયા તતમિદં સર્વંજગદવ્યક્તમૂર્તિના).*** ૬ ઠ્ઠા અધ્યાયના શ્લોક ૪૭માં કહ્યું છે ***'યોગિનામપિ સર્વેષાં મદ્ગતેનાન્ત રાત્મના। શ્રદ્ધાવાન્ભજતે યો માં સ મે યુક્ત તમો મતઃ।।'*** આવા બીજા પણ શ્લોકો છે.

એટલે પ્રશ્ન ઊભો થાય છે કે ગીતાના કહેવાવાળા શું પોતાને પરમાત્મા જ માનતા હતા? બીજો પ્રશ્ન એ કે શું મહાભારતના રચયિતા કૃષ્ણ દ્વૈપાયન વ્યાસ, ભગવાન કૃષ્ણને સચ્ચિદાનન્દ પરમાત્મા માનતા હતા? શુ ભગવાન કૃષ્ણનું જીવન પણ એવું સિદ્ધ કરે છે કે તેઓ પરમાત્મા જ હતા?

જે લોકો એવું માને છે કે બધાં જ પ્રાણિઓમાં જીવાત્મા પરમાત્માનું જ સ્વરૂપ છે, એમના માટે તો આ પ્રશ્નનો જવાબ શોધવામાં કોઈ જ મુશ્કેલી ઊભી નથી થતી. બધા પ્રાણિઓમાં જીવાત્મા પરમાત્મા જ છે તો કૃષ્ણનો જીવાત્મા પણ પરમાત્મા જ છે. એમાં શંકાને સ્થાન છે જ નહીં. કૃષ્ણમાં અને અર્જુનમાં, દુર્યોધન અને યુધિષ્ઠરમાં અન્તર માત્ર જ્ઞાનની માત્રાનું જ બાકી રહી જાય છે. આવો વિચાર ધરાવનારાઓનું માનવું છે કે પરમાત્મા પોતાની માયામાં લિપ્ત થઈને ભ્રમમાં ફસાઈને સુખ-દુ:ખની અનુભૂતિ કરે છે. એટલે શ્રી કૃષ્ણ, અર્જુન અથવા તો અન્ય પ્રાણિઓની અપેક્ષાએ ઓછા અંશે ફસાયેલા પરમાત્મા જ હતા. એવી જ રીતે અન્ય બીજા પ્રાણિઓમાં પણ ચેતન તત્ત્વ પરમાત્માનું જ સ્વરૂપ છે.

પરન્તુ ગીતામાં તો સ્થળે સ્થળે પરમાત્મા, આત્મા અને પ્રકૃતિમાં ભેદ માન્યો છે. ૧૩માં અધ્યાય અને ૧૭માં વ્યક્ત જગત્, જીવાત્મા અને પરમાત્મા જુદા જુદા હોવાનું વર્ણન છે.

એટલે ત્રણેને જુદા માનવાવાળાઓ સામે પ્રશ્ન તો ઊભો જ છે કે ભગવાન કૃષ્ણ પરમાત્મા છે કે નહીં?

ગીતામાં અનેક સ્થળે કૃષ્ણે પરમાત્માને તૃતીય એટલે કે અન્ય વચનમાં પણ કહ્યા છે. જેમ કે પરમાત્મા (પ્રભુ) લોકના કર્તૃત્ત્વને અથવા કર્મને નથી બનાવતા, ન તો એ કર્મ અને ફળના સંયોગના બનાવવા વાળા છે. આ (જગત) તો સ્વભાવાનુસાર (નિયમાનુકૂળ) ચાલી રહ્યું છે.

'ન કર્તૃત્ત્વં ન   કર્માણિ લોકસ્ય સૃજતિ પ્રભુઃ।
ન કર્મફલસંયોગં સ્વભાવસ્તુ પ્રવર્તતે।।'.

આગળ ઉપર કહ્યું છે – એ સર્વવ્યાપક પરમાત્મા (વિભુ:) ન કોઈના પાપ કર્મ અને ન તો કોઈના પુણ્ય કર્મોને ગ્રહણ કરે છે (અર્થાત એનાથી અલિપ્ત રહે છે). વાસ્તવિક સ્થિતિ અજ્ઞાનથી ઢંકાયેલી છે. એટલે જ બધા જીવો મોહિત થઈ રહ્યા છે.

'નાદત્તે કસ્યચિત્પાપં ન ચૈવ સુકૃતં વિભુઃ।
અજ્ઞાનેનાવૃત્તં જ્ઞાનં તે મુહ્યન્તિ જન્તવઃ।।'

ફરીથી કહે છે કે આ ચંચળ મનને, એ જે કારણે સંસારમાં વિચરણ કરે છે, ત્યાંથી હટાવીને પરમાત્મામાં જ લગાવો.

પાપરહિત યોગી આત્માને પરમાત્મા (બ્રહ્મ) સાથે જોડીને પરમાત્માના સ્પર્શથી આનન્દનો અનુભવ કરે છે.

'યતો યતો નિશ્ચરતિ મનશ્ચંચલમસ્થિરમ્।
તતસ્તો નિયમ્યૈતદાત્મન્શેવ વશં નયેત્।।'

આવી રીતે અનેક સ્થળે જ્યાં પરમાત્માને 'હું, મારું, મારા', ઈત્યાદિ શબ્દોમાં કહ્યા છે, ત્યાં પ્રભુ, બ્રહ્મ તથા એ શબ્દોમાં પણ સ્મરણ કરવામાં આવ્યા છે, જે પરમાત્માને પોતાનાથી જુદા જુએ છે. તો આમ શા માટે છે? આના કારણે પ્રશ્ન વધારે મહત્ત્વનો બની જાય છે કે ગીતામાં શું સાચે જ કૃષ્ણને પરમાત્મા માન્યા છે?

આ પ્રશ્નનો ઉત્તર શોધવા માટે બે વાતોની સ્પષ્ટતા કરવી પડશે. એક તો આપણે પરમાત્માના કેવા સ્વરૂપને માનીએ છીએ અને શું ખરેખર કૃષ્ણનું સ્વરૂપ એવું જ છે? મહાભારતમાં શ્રીકૃષ્ણના જીવન ચરિત્રનો સ્વાધ્યાય કરવો પડશે. મહાભારતનો સ્વાધ્યાય એટલા માટે કે ગીતા પણ મહાભારતનો જ એક અંશ છે. એ કંઈક એવું કહે જે પરમાત્માના સ્વરૂપ કરતા જુદું હોય, તો શ્રીકૃષ્ણના પરમાત્મા હોવાના સન્દેહની પુષ્ટિ થશે. બીજી પણ એક વાત પર ધ્યાન આપવું પડશે – કે શ્રી કૃષ્ણે ગીતા ઉપરાન્ત બીજે ક્યાંય પોતાના પરમાત્મા કહ્યા છે કે કેમ? મહાભારતમાં અનેક સ્થળે શ્રીકૃષ્ણના વચન કહ્યા છે. જો ત્યાં શ્રીકૃષ્ણે પોતાને મનુષ્ય માત્ર જ માન્યા હોય તો આ પ્રશ્ન વધારે મહત્ત્વનો બની જાય. એનાથી વિપરીત એ પણ જાણવા જેવું છે કે મહાભારતમાં શ્રીકૃષ્ણે પોતાને, કોઈ વચનમાં એક પણ વાર પરમાત્મા કહ્યા કે કેમ?

આ પ્રશ્ન પર વિચાર કરવા માટે કે કૃષ્ણ પરમાત્માના અવતાર હતા કે કેમ પર આ બધા દૃષ્ટિ કોણથી વિચારવું પડશે. આપણે એક પછી એક પર નજર નાખીશું. ગીતામાં અનેક સ્થળે પરમાત્માને અન્ય વચનમાં કહ્યા છે. ત્યાં કૃષ્ણ પરમાત્માને પોતાના કરતા જુદા કહે છે. આના પરથી વિચાર ઊભો થાય છે કે ગીતામાં જ્યાં પરમાત્માને ઉત્તમ પુરુષમાં કહ્યા છે, ત્યાં કંઈ વિશેષ પ્રયોજન હોવું જોઈએ. આપણે એને એવી રીતે પણ કહી શકીએ કે પરમાત્માને ઉત્તમ વચનમાં લખવા અને અન્ય વચનમાં લખવા પાછળ કોઈ ચોક્કસ પ્રયોજન છે જ. એના પ્રત્યક્ષ અર્થ ન લેવા જોઈએ. ન તો એ લેવો જોઈએ કે કૃષ્ણે પોતાને પરમાત્મા પ્રયાસ કર્યો છે, ન તો આપણે ગીતામાંથી એવો અર્થ લઈ શકીએ છીએ કે કૃષ્ણે પોતે પરમાત્માના અવતાર છે એમ કહ્યું છે.

समाचार दर्पण

जन्मभूमि टंकारा को विश्वदर्शनीय बनायेंगे

हरियाणा के राज्यसभा के सदस्य और गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश ने आर्यसमाज के संस्थापक श्री महर्षि

दयानन्द की जन्मभूमि को विश्वदर्शनीय बनाए जाने में और प्रयास करने का अनुरोध किया।

डॉ. रामप्रकाश ने मोरबी टंकारा की पुरानी रेलवे लाईन प्रारम्भ करने तथा उसको राजकोट तक ले जाने की मांग संसद में कर चुके हैं। टंकारा में उपस्थित होने पर श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट तथा आर्यसमाज में उनका सम्मान किया गया। इसमें आचार्य रामदेव जी, प्रा. दयालमुनि, सरपंच धर्मेन्द्रभाई त्रिवेदी उपस्थित रहे थे। हसमुखभाई परमार ने स्वागत किया।

डॉ. रामप्रकाश ने कहा कि राष्ट्र में अनेक महापुरुष हुए हैं, परन्तु गुजरात ने महर्षि दयानन्द को योग्य मान-सम्मान नहीं दिया है। यदि महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि कहीं हरियाणा में होती तो उसे विश्व दर्शनीय बनाई जाती और विश्व के लोग उसे देखने के लिए आते। उन्होंने गुजरात आने वाली एक रेलवे ट्रेन (राजकोट तक) एयरपोर्ट तथा यूनिवर्सिटी के साथ महर्षि दयानन्द का नाम रखने की मांग कर टंकारा को विश्वदर्शनीय बनाने का अनुरोध किया है। डॉ. रामप्रकाश ने कहा था कि गुरुकुल कांगड़ी युनिवर्सिटी के कुलाधिपति का पदभार ग्रहण करने से पहले महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा की मिट्टी को माथे से लगाने आया हूँ, और प्रेरणा लेने आया हूँ ताकि स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों को गुरुकुल कांगड़ी के माध्यम से पूर्ण करने का प्रयास कर सकूं।

-हंसमुख परमार ट्रस्टी

टंकारा में आगामी बोधोत्सव 2014

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन बुधवार, वीरवार, शुक्रवार 26,27,28 फरवरी 2014 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप तिथियां अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

- रामनाथ सहगल, ट्रस्ट मन्त्री

श्री ओंकारनाथ आर्य महिला सिलाई केन्द्र, टंकारा

टंकारा स्थित परिसर में संचालित उपरोक्त सिलाई केन्द्र श्रीमति शिवराजवति आर्य एवम् श्री सुनील मनाकटला की प्रेरणा एवम् आर्थिक सहयोग से निरन्तर पिछले कई वर्षों से कार्यरत हैं। साधारण एक सिलाई मशीन से प्रारंभ हुआ यह केन्द्र अब पुरे सौराष्ट्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहां सिलाई-कढ़ाई का परिक्षण तो दिया ही जाता है साथ ही सिलाई कढ़ाई का परिक्षण देने के लिए आध्यापिकाएँ भी प्रशिक्षित की जाती हैं। दोनों पाठ्यक्रम गुजरात आई.टी.आई. से मान्यता प्राप्त हैं। यहां से प्रशिक्षित महिला/बालिकाएं गुजरात राज्य का प्रमाण पत्र प्राप्त करती हैं। यह सिलाई केन्द्र पुर्ण रूप से नि:शुल्क है। इस केन्द्र को श्रीमती राज लूथरा माता जी कई वर्षों से अपने निर्देशन में चला रही हैं। लगभग वर्ष भर अपने परिवार से दूर रहकर टंकारा में अपनी सेवाएं देती हैं। वर्ष 2012 के परिणाम निम्नलिखित हैं।

वार्षिक परीक्षा परिणाम वर्ष 2012

हैन्ड मशीन ऐम्ब्रोयडरी तथा फेन्सी वर्क (द्वितीय वर्ष)

विद्यार्थिनी का नाम	प्राप्त गुण	टका	नंबर
बादी तयबा बहन	310	77.2%	1
बादी तसरीफ बहन यु.	296	74.2%	2
धार्मिक जोगेश्वरी एस.	270	67.2%	3

वार्षिक परीक्षा परिणाम वर्ष 2012

गारमैन्ट मैकिंग (प्रथम वर्ष)

विद्यार्थिनी का नाम	प्राप्त गुण	टका	नंबर
शेरशीया याश्मीन बहन एच.	271	67.3%	1
बादी तब्बसुम बहन एच.	270	67.2%	2
डामोर सुरेखा बहन आर.	261	65.1%	3
गामीत जागृति बहन पी.	259	64.3%	4
जीवाणी आरती बहन एन.	257	64.1%	5
तिवारी अनिता बहन डी.	254	63.2%	6
कडीवार रूबीना बहन एच	254	63.2%	6
चौहाण फातमा बहन जे.	249	62.1%	8
चौहाण हाजरा बहन जे.	247	62.0%	8
सोहर्वदी हसीना बहन एच.	246	61.2%	9
बादी कौशर बानु एम.	246	61.2%	9
शेरशीया नशीम बहन एच.	246	61.2%	9
गोस्वामी वैशाली बहन आर.	226	46.2%	10
भालोडीया प्रीति बहन पी.	223	44.3%	11

प्रवेश

प्रथम पाठ्यक्रम: महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) से मान्यता प्राप्त। विद्यालय में प्राच्य व्याकरण पाठ्यक्रम से अध्ययन कराया जाता है। प्रवेश प्राप्त करने के लिए कक्षा सात उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। आठवीं कक्षा में प्रवेश प्राप्त होगा। विद्यालय में पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य पर्यन्त का अभ्यासक्रम हैं। जिसमें प्राच्य व्याकरण के उपरान्त वेद, दर्शन, उपनिषद् और ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है। यहां से उत्तीर्ण स्नातक बी.एड. अथवा अन्य परीक्षायें देकर सरकारी अथवा सरकार मान्य संस्थाओं में सेवा प्राप्त कर सकते हैं।

द्वितीय पाठ्यक्रय में उपदेशक कक्षायें चलती हैं जिसमें व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषदादि के उपरान्त ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं। भजन, प्रवचन तथा कर्मकाण्ड विशेष रूप से सिखाकर आर्य समाज के पुरोहित हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। यहां से उत्तीर्ण स्नातक आर्य समाजों अथवा आर्य संस्थाओं में पुरोहित अथवा अन्य सेवा कार्य प्राप्त कर सकते हैं। दोनों पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थी अपने निकटतम आर्य समाज से परिचय-पत्र प्राप्त कर लावें तो अधिक उचित होगा। दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त करने हेतु आचार्य जी से पत्र व्यवहार अथवा दूरभाष से जानकारी प्राप्त करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय

टंकारा, जिला राजकोट, गुजरात-363659 फोन न. 02822-287756 मो. 09913251448

आवश्यकता

महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में चल रहे महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ऐसे उपाचार्य की आवश्यकता है जो काशिका तथा महाभाष्य एवं निरूक्तादि पढ़ाने में सक्षम हो। योग्यतानुसार वेतन एवं आवास-भोजनादि की सुविधा विद्यालय में दी जायेगी। नीचे लिखे पते पर प्रमाण-पत्र, अनुभव तथा पासपोर्ट साईज की फोटो के साथ आवेदन पत्र भेजें।

रामदेव शास्त्री, आचार्य, मो. 09913251448 महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा, जिला राजकोट, गुजरात-363659 फोन-02822-287756

आध्यापक की आवश्यकता

श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल खेड़ा-खुर्द दिल्ली-82 में कक्षा 5वीं से लेकर 12वीं तक की कक्षाओं को गणित, विज्ञान और अंग्रेजी पढ़ाने हेतु योग्य एवं गुरुकुलीय वातावरण में रहने के इच्छुक अध्यापकों की आवश्यकता है। सुविधा-वेतन के साथ भोजन, दूध, वस्त्र आदि इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें। – आचार्य सुधांशु-मो. 9350538952

बुजुर्गो के अनुभवों का लाभ उठाएं

बुजुर्ग हमारी धरोहर हैं। हमें हमारे बुजुर्गो का पूरा सम्मान करना चाहिए। बुजुर्गो के अनुभवों का लाभ लेते हुए अपने जीवन में उतारें व अन्य लोगों के बीच भी बुजुर्गो के अनुभवों को बांटना चाहिए। यह बात आर्य समाज जिला कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्डा ने आर्य समाज विज्ञान नगर की ओर से आयोजित यज्ञ सत्संग कार्यक्रम में व्यक्त किए।

तम्बाकू-सेवन निषेध संकल्प पत्र भरे

सीनियर सिटिनजन फोरम मानसरोवर जयपुर के प्रांगण में मासान्त होने वाले वैदिक विधि यज्ञ के पश्चात् उपस्थित समुदाय ने तम्बाकु सेवन निषेध संकल्प पत्र में प्रतिबद्धता दर्शाई।

सीनियर सिटिजन फोरम, मासान्त में वैदिक-विधि से यज्ञ आयोजन कराता है। इस बार दिनांक 31.05.2013 को तम्बाकू-सेवन-निषेध दिवस का भी संयोग हुआ। यज्ञोपरान्त ब्रह्मपीठ से अपने सम्बोधन में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) के अध्यक्ष यशपाल 'यश' ने तम्बाकू सेवन से हानियाँ और तदजनित रोगों पर प्रामाणिक ऑकड़ों के साथ प्रकाश डाला। यशपाल 'यश' की प्रेरणा से सभी उपस्थितों ने तम्बाकू सेवन न करने के लिए संकल्प पत्र भरे।

चरित्र-निर्माण शिविर

पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं यतिमां सत्यप्रिया जी ने मोगा (पंजाब) में पी मार्का सरसों के तेल के सुप्रसिद्ध उद्योग द्वारा संस्थापित श्री देवीदास केवल कृष्ण चैरिटेबल ट्रस्ट में अपनी ज्ञानगंगा प्रवाहित करते रहे। इसके अतिरिक्त समय-समय पर योग-ध्यान शिविरों, चरित्र-निर्माण शिविरों तथा विशेषरूप से विद्वानों को बुलाकर उनके प्रवचनादि कराने की व्यवस्था की जाती है। यह संस्थान मोगा निवासियों के लिए किसी तीर्थ के समान हो गया है। वर्तमान में प्रमुख समाजसेविका बहिन इन्दु पुरीजी बड़ी ही श्रद्धा एवं उत्साह के साथ संस्थान की समस्त गतिविधियों को कार्यरूप देती है। इस बार उपरोक्त तिथियों में 150 कन्याओं का चरित्र-निर्माण शिविर बहुत ही सफलता के साथ पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। एक ओर जहां कन्याओं को मूर्ति-कला, नृत्यकला, संगीत कला का अभ्यास कराया गया वहीं दूसरी ओर उन्हें वैदिक मान्याओं से भी संवाद की कक्षा में प्रशिक्षित किया गया।

बिस्मिल के जन्मोत्सव पर समारोह

आर्यवीर क्रान्तिकारी पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आर्यसमाज नोएडा के तत्वावधान में क्रान्तिकारी एवं राष्ट्रभक्ति भरे गीतों का कार्यक्रम 'बिस्मिल सभागार' में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ आचार्य डा. जयेन्द्र जी द्वारा संध्या वंदन एवं कैप्टन अशोक गुलाटी द्वारा 'बिस्मिल' की प्रसिद्ध रचना 'वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्तव्य मार्ग पर डट जाएं' का पाठ किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के कैबीनेट मन्त्री नरेन्द्र सिंह भाटी ने कहा कि आजादी से पूर्व पैसा नहीं बल्कि लोग बड़े होते थे। यही कारण है कि देश के लिए शहीदों ने अपने सुख चैन को छोड़कर हंसते-हंसते अपने प्राणों की आहूति दे दी। कार्यक्रम में बतौर विशिष्ट अतिथि अपना उद्बोधन करते हुए चेतना मंच के संपादक आर. पी. रघुवंशी ने कहा कि हम बदलेंगे तो जग बदलेगा। इसलिए अपने आपको बदलने की जरूरत है। कार्यक्रम में प्रसिद्ध शिक्षाविद् और एमिटी समुह के निदेशक आनन्द चौहान ने संस्था के संरक्षक के दायित्व को निभाते सभी आगन्तुकों का आभार व धन्यवाद व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि संस्कारवान समाज का निर्माण करने के लिए इस तरह के आयोजन करना बेहद जरूरी है। हमें समाज को संगठित कर देशभक्ति के एक सूत्र में पिरोना होगा।

योग-ध्यान-साधना शिविर सूचना

सुप्रसिद्ध आनन्द धाम आश्रम, गढ़ी, उधमपुर (जम्मू कश्मीर) का शरद्-कालीन योग-ध्यान-साधना शिविर 22 से 29 सितम्बर 2013 तक आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निर्देशक आर्यजगत् के ख्याति-प्राप्त वैदिक प्रवक्ता, मनीषी तथा अनेक ग्रन्थों के रचयिता और साहित्य अकादमी सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित पूज्यपाद महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में आयोजित किया जाएगा। शिविर में सामवेद पारायण-यज्ञ के अतिरिक्त दर्शन-ग्रन्थों के पठन-पाठन एवं शंका-समाधान और भजनों, प्रवचनों आदि का कार्यक्रम भी रहेगा। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क होगा इसलिए अपना स्थान यथा समय आरक्षित करने के लिए मो. 09419107788 पर संपर्क करें।

आर्य गौरव

आर्य समाज फिरोजपुर छावनी के सुप्रसिद्ध आर्य परिवार महाशय स्व. श्री छज्जूराम आनन्द की पौत्री श्रीमती एवं श्री विजय पाल आनन्द वरिष्ठ उपप्रधान आर्य समाज फिरोजपुर छावनी व संस्थापक सदस्य एवं उपप्रधान वैदिक सत्संग परिवार पंजाब की सुपुत्री आयुष्मती कु. तमन्ना आनन्द ने अपनी शिक्षा (चिकित्सक) डाक्टर की पढ़ाई प्रथम श्रेणी में उत्तीण की। इस संदर्भ में उन्हें भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी ने मानक उपाधि एवं स्मृति चिन्ह सील्ड देकर सम्मानित किया। आनन्द परिवार की ओर से आर्य समाज में एक समारोह आयोजित किया गया। मुख्य यज्ञमान डॉ. कुमारी तमन्ना आनन्द बनी फिरोजपुर शहर की समस्त आर्य समाज आर्य परिवार इस महान यज्ञ में उपस्थित हुए।

कर्मठ आर्य वीरांगना नहीं रही

श्रीमती शान्ता आर्य का जन्म 1920 में एक आर्य परिवार में पिता शोभा राम एवम् माता दयावती के द्वितीय पुत्री के रूप में हुआ। आर्य समाज का आप पर इतना प्रभाव था कि आपको 7 वर्ष की आयु में ही संध्या के मन्त्र सस्वर भावार्थ सहित कंठस्थ थे। विवाह उपरान्त आप लाहौर स्थित आर्य समाज अनारकली से जुड़ी रही। आप एक सफल शिक्षिका थी और उपप्रधानाचार्य के रूप में कार्य निवृत हुई और आर्य समाज, दयानन्द नगर, गाजियाबाद से जुड़ी रही और निरन्तर 2006 तक स्त्री आर्य समाज की अन्तरंग सदस्य रही। आपका ऋषि जन्म भूमि टंकारा से विशेष लगाव था और आपकी प्रेरणा से ही श्री सतीश कुमार जी दुआ जिन्होंने ऋषि जन्मभूमि को दर्शनीय बनाने हेतु निरन्तर कई वर्षों तक तन-मन-धन से सेवा की और आज भी जुड़े हुए हैं। समस्त टंकारा परिवार की ओर से माता जी के प्रति भावभिनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। **- अजय**

श्रद्धा के सुमन अर्पित

एस.एस.एन. आर्य हाई स्कूल रामा के संस्थापक व संचालक पूज्य महाशय निहालचन्द जी आर्य की बरसी प्रात: हवन यज्ञ द्वारा श्रद्धापूर्वक मनाई गई। यज्ञ सभा में विराजमान काफी संख्या में पधारे आर्य बन्धुओं ने अपने प्रिय समाज सेवी महाशय जी को श्रद्धा के सुमन अर्पित किए।

चुनाव समाचार

आर्य समाज छोटी सादडी, प्रतापगढ़, राजस्थान
प्रधान- श्री प्यार चंद साहू **मन्त्री-** श्री महेश शर्मा
कोषाध्यक्ष- श्री करण मल साहू

आर्य समाज सफदरजंग एन्क्लवे, नई दिल्ली-110029
प्रधान- श्री रवि देव गुप्ता **मन्त्री-** श्री एस.के. शर्मा
कोषाध्यक्ष- श्री संजय खण्डेलवाल

स्त्री आर्य समाज सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली-110029
प्रधान- श्रीमती सरोज कौडा **मन्त्री-** श्रीमती अंजू लखेरा
कोषाध्यक्ष- श्रीमती नीलम गुप्ता

आर्य समाज मन्दिर, स्वामी पाडा, बुढाना गेट, मेरठ शहर, उ.प्र.
प्रधान- श्री रविन्द्र रस्तोगी **मन्त्री-** श्री योगेश मुवार
कोषाध्यक्ष- श्री योगेश चन्द्र गुप्ता

आर्य समाज ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016
प्रधान- स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती **मन्त्री-** श्री वीरेन्द्र अरोड़ा
कोषाध्यक्ष- श्री प्रेम प्रकाश सब्बरवाल

पुरोहित सभा लुधियाना, 58/8 जवाहर नगर, लुधियाना, पंजाब
प्रधान- श्री बाल कृष्ण शास्त्री **मन्त्री-** श्री योगराज शास्त्री
कोषाध्यक्ष- श्री रमेश कुमार शास्त्री

आर्य समाज राजाजीपुरम, लखनऊ, उ.प्र.
प्रधान- डॉ. आनन्द बरनवाल **मन्त्री-** श्री निरंजन सिंह
कोषाध्यक्ष- श्री राजीव बत्रा

आर्य समाज शिवाजी नगर, गुड़गावां, हरियाणा-122001
प्रधान- श्री प्रभु दयाल चुटानी **मन्त्री-** श्री विरेन्द्र सेतिया
कोषाध्यक्ष- श्री महेन्द्र प्रताप आर्य

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर, राजस्थान
प्रधान- श्री शम्भू नाथ यादव **मन्त्री-** श्री महेश चन्द्र सोनी
कोषाध्यक्ष- श्री नरसिंह आर्य

आर्य समाज नकुड़, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश
प्रधान- श्री अमरीश कुमार गोयल **मन्त्री-** श्री भूपेन्द्र कुमार शर्मा
कोषाध्यक्ष- श्री डॉ. शिव कुमार

खण्डन में ही मण्डन है

एक दिन की बात है कि मैं सत्यार्थप्रकाश पढ़ रहा था। एक परिचित व्यक्ति मेरे हाथों में सत्यार्थप्रकाश देखकर कहने लगे कि स्वामी दयानन्द ने खण्डन का बहुत काम किया है। मैंने कहा खण्डन के बिना मण्डन हो ही नहीं सकता। आप कहीं भी कोई कार्य करो तो पहले खण्डन करना होगा। जैसे आप बहुत बढ़िया कपड़े की कमीज या कुर्ता बनवाना चाहते हो तो दर्जी पहले कपड़े को काटकर टुकड़े टुकड़े करेगा, बाद में जोड़कर मण्डन करेगा। दूसरी बात सुनो, मान लो शरीर में फोड़ा बनकर दर्द कर रहा है। जब तक डाक्टर उसमें नश्तर (चीरा) नहीं लगाएगा तब तक वह ठीक हो ही नहीं सकता। अच्छा बताओ! आपका कोई मित्र धूम्रपान या मद्यपान करता है, उसकी इस बुराई को दूर करने के लिए यदि उसे कहा जाए कि यह बुरी आदत है, स्वास्थ्य को हानि देती है, तो इसे आप खण्डन करना कहोगे या मण्डन करना। समझ लो कि ये ही काम स्वामी दयानन्द जी ने किया है। जहां जहां मत मतान्तरों में ऋषि ने मिथ्या बातों को देखा उसे प्रकट कर दिया। किसी का दिल दुखाने के लिए नहीं अपितु भला करने की दृष्टि से।

–देवराज आर्य मित्र

(पृष्ठ 2 का शेष)

बुढ़ापे में यह भावना मर जाती है। बूढ़े लोगों की बातें सुनिये। 'ऐसा था, वैसा था' का ही बोलबाला रहता है। **जवान आगे देखते हैं बूढ़े पीछे लौटना चाहते हैं क्योंकि आगे उनके लिए खतरा है।** यही कारण है कि संसार को आमतौर पर जवान ही बदलते हैं। घनत्व, आकर्षण, सापेक्षता आदि के क्रान्तिकारी वैज्ञानिक आविष्कार जवानों ने ही किये थे। विकासवाद, साम्यवाद, अचेतनवाद आदि सिद्धान्तों के जन्मदाता भी जवान चिन्तक थे। भारत को बदलने वाले बुद्ध, शंकराचार्य, दयानन्द, गाँधी आदि महात्माओं ने अपने सिद्धान्त जवानी में ही स्थिर किये थे।

डी.ए.वी. आन्दोलन का सम्बन्ध इन्हीं जवानों में से एक के साथ है। दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक संस्थाओं के ये प्रेरणा-स्रोत स्वामी दयानन्द हैं। उनमें युगान्तरकारी युवक की सभी विशेषताएं प्रभूत मात्रा में विद्यमान थी। बचपन में जिज्ञासा से प्रेरित होकर उन्होंने मूर्तिपूजा का अंधविश्वास छोड़ दिया। यही जिज्ञासा उन्हें सम्पन्न घर के सुख-साधन छुड़वाकर पहाड़ों और जंगलों में ले गई। इस जिज्ञासा ने उन्हें महंताई के प्रलोभन और मृत्यु की कामना से बचाया। इसी जिज्ञासा से प्रेरित होकर उन्हें मुर्दे की चीर-फाड़ की यह जिज्ञासा यश की पराकाष्ठा पा लेने पर भी यथावत बनी रही। 'सत्यार्थप्रकाश' की भूमिका में उन्होंने विनयपूर्वक भूल-चूक जताने वालों को वचन दिया कि 'जो वह मनुष्यमात्र का हितैषी होकर कुछ जनावेगा उसको सत्य-सत्य समझने पर उसका मत संगृहीत होगा।' बलिदान और दृढ़ता के तो वे मानो अवतार थे। मौत के भय ने भी उन्हें कभी अपने मार्ग से विचलित नहीं किया। बचपन में अपनों की मौत देख कर कांपे थे, जवानी में कफन बांध कर घूमने लगे। अन्त समय में मारने वाले को भी माफ कर दिया।

सत्याग्रह और परोपकार उनके जीवन के मूलमन्त्र थे। मनुष्य-मात्र की हितकामना से सत्य का अन्वेषण और प्रचार करने में उन्होंने अपना जीवन होम दिया। इन्हीं उद्‌देश्यों की प्राप्ति के लिए उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की। आर्य समाज के दस नियमों में ईश्वर और वेद के बाद सत्य और परोपकार पर बल हैं। सत्य के आग्रह से ही अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि का नियम बनाया गया। डी.ए.वी. आन्दोलन मुख्यतः इस आठवें नियम की प्रेरणा का फल है। डी.ए.वी. स्कूल और कॉलेज 1886 से भारतीय जनता में सच्ची विद्या का प्रचार कर रहे हैं। देश का विभाजन हो जाने पर इस संस्था के कार्य में अनेक बाधाएं आ गई थी परन्तु कार्यकर्त्ताओं के तप और त्याग से उसने पुनः शक्ति प्राप्त की। आज देश भर में इस संस्था के अधीन 50 कॉलिज, 22 तकनीकी या व्यावसायिक संस्थान, 544 पब्लिक स्कूल एवं 38 आदर्श या प्राथमिक विद्यालय चल रहे हैं। उल्लेखनीय है कि उड़ीसा के पिछड़े और आदिवासी क्षेत्रों में भी इसकी गतिविधियां प्रारम्भ हो गई हैं।

ऐंग्लो वैदिक शब्द ज्ञान की समन्वयात्मक प्रक्रिया के सूचक हैं। यह समन्वय की भावना भारतीय संस्कृति की आत्मा है। इसे पहचाने बिना भारतीय संस्कृति का मर्म जानना संभव नहीं है। संस्कृति का अध्ययन करने वाले लोग जानते हैं कि भारतीय दर्शन, धर्म, साहित्य, संगीत, कला और जीवन-व्यवहार आदि सभी में समन्वय के अद्‌भुत उदाहरण मिलते हैं। स्वयं स्वामी जी ने धार्मिक परम्पराओं की आलोचना में वैज्ञानिक दृष्टि का समन्वय किया था। वैदिक और वैज्ञानिक ज्ञान के ऐसे समन्वय का स्वप्न ही डी.ए.वी. आन्दोलन के मूल में है। ऐंग्लो शब्द उस ज्ञान-सम्पत्ति का सूचक है जिसे हमारे रहनुमा अपने आंग्ल समकालीनों से प्राप्त करना चाहते थे। इसे दोहराने की आवश्यकता नहीं कि मुट्ठी भर अंग्रेज वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान की शक्ति लेकर ही भारत जैसे विशाल और सम्पन्न देश पर हावी हो सके थे। हमारे देशी राजाओं ने अपनी अदूरदृष्टि के कारण शिक्षा की लगभग उपेक्षा कर दी और फलतः ज्ञान की शक्ति हमारे हाथ में नहीं रही। इसीलिए नये भारत के सभी निर्माता इस नये ज्ञान की शक्ति को प्राप्त करने के पक्षपाती थे। अंग्रेज अपनी कूटनीति के कारण हमें अंग्रेजी भाषा तो सिखाना चाहते थे परन्त वैज्ञानिक ज्ञान देने में कंजूसी करते थे। स्वामी जी के समकालीन भारतेन्दु हरिशचन्द्र जैसे राष्ट्रनेता 1872 के आसपास तकनीकी ज्ञान के प्रसार की आवश्यकता पर बल देना आरम्भ कर दिया था। राष्ट्र की इसी आवश्ययकता की पूर्ति का संकल्प दयानन्द ऐंग्लो वैदिक संस्थाओं ने लिया।

इस समन्वय-संकल्प की आवश्यकता आज भी ज्यों की ज्यों बनी हुई है। उस समय वैदिक ज्ञान के साथ वैज्ञानिक ज्ञान का योग आवश्यक था। आज वैज्ञानिक ज्ञान में वैदिक ज्ञान का पुट चाहिए। आज विश्व भर में मनोवैज्ञानिक ज्ञान का विस्फोट हो गया है। पहले जितना ज्ञान सदियों में बढ़ता था, आज उतना महीनों में बढ़ रहा है। ज्ञान के इस विकास की गति उत्तरोत्तर बढ़ रही है। पश्चिम ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण धर्म और कलाओं की उपेक्षा कर दी थी। आज वहां के चिन्तन धर्म और विज्ञान की दो संस्कृतियों का समन्वय करने को बेचैन होने लगे हैं

ऐंग्लो-वैदिक समन्वय की प्रक्रिया चलती रहनी चाहिए। ज्यादा बेहतर होगा यदि कहूं कि और तेजी से चलनी चाहिए। पहले वैज्ञानिक ज्ञान लाने के लिए ही प्रयत्न की आवश्यकता थी। वैदिक ज्ञान प्रायः सहज उपलब्ध था। आज इस समन्वय की आवश्यकता दो धरातलों पर है। पिछड़े क्षेत्रों में वैज्ञानिक ज्ञान पहुंचाना है। अपेक्षया विकसित समाजों में अर्थात् नगरों और महानगरों में उपेक्षित वैदिक ज्ञान को पुनः स्थापित करना है। समन्वय की यह दोहरी मांग युवकों के लिए चुनौती है। जिस साहस और धैर्य से दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और हंसराज जैसे युवा महात्माओं ने अपने समय की चुनौती स्वीकार की थी उसी की प्रतिमा के रूप में युवा आर्यपुत्र श्री पूनम सूरी जी ने यह दायित्व अपने ऊपर लिया है।

क्या यह मान लें कि उस समय की जवानी जाग रही थी और आज की जवानी सो गई है? आजादी के कुछ देर बाद तक ऐसा लगा था कि सचमुच सो गई। इधर कुछ समय से उसने फिर अंगड़ाई ली है। विध्वंस के स्थान पर सृजनात्मक शक्तियाँ सक्रिय होने लगी हैं। राष्ट्र के नव-निर्माण के लिए युवा पीढ़ी में एक नया उत्साह आया है। आर्यसमाज और डी.ए.वी. आन्दोलन इन सृजनात्मक शक्तियों को श्री पूनम सूरी जी के नेतृत्व में जगाने और उचित मार्ग पर लगाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज, महर्षि दयानन्द की दो भुजायें थीं इन दोनों महापुरुषों ने अपने-अपने क्षेत्र में, शिक्षा में एवं समाज सुधार में प्रशंसनीय कार्य किये और शिक्षा-पद्धति को एक ऐसा मोड़ दिया कि आज भी संसार में आर्यसमाज की संस्थाओं का एक विशेष महत्व है परन्तु अब समय आ गया है कि दोनों पद्धतियों का आपस में समन्वय होना अत्यन्त आवश्यक है ताकि आज की युवा पीढ़ी को एक नई दिशा प्राप्त हो सके।

टंकारा समाचार अगस्त, 2013
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel R.M.S. on 1/2-08-2013
R.N.I. No 68339/98

एम.डी.एच. के एड मेल से आ रही है।

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 दूरभाष : 41548504 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय